अनुक्रमणिका

(१) मान मंदिर, गह्वरवन
(२) युग-पुरुष संत श्रीरमेशबाबा का कृतित्त्व एवं व्यक्तित्त्व
(३) मानमंदिर सेवा संस्थान के क्रियाकलाप
(४) परम पूज्या दीदी जी का संक्षिप्त परिचय
(५) श्रीबाबामहाराज के चरणाश्रित व
सर्वात्मसमर्पित परमसंत रामजीलालशर्मा
(६) अलौकिक प्रतिभा की धनी हैं बालसाध्वी मुरलिकाजी

|| राधे किशोरी दया करो ||

हमसे दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो |
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो |
विषम विषयविष ज्वालमाल में, विविध ताप तापनि जु जरो |
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो |
दास तुम्हारो आस और की, हरो विमुख गति को झगरो |
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्‌यो |

संरक्षक – श्री राधा मान बिहारी लाल

प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री,

मान मंदिर सेवा संस्थान

गह्वर वन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

Website :www.maanmandir.org
E-mail :ms@maanmandir.org
mob. : 9927338666, 9837679558

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप बाबाश्री के प्रातःकालीन सत्संग का ८ से ९ बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि || (श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देनेमें जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्यके सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता |

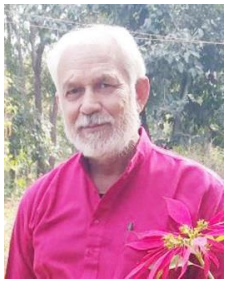

प्रकाशकीय

सनातनधर्म की सनातनसंस्कृति की सनातनता बनाये रखने के लिये यथा समय भगवान् महापुरुषों के रूप में अवतरित होते हैं | विशेष रूप से कलिकाल में जब धर्म की गति मंद हो जाती है तो अधर्म का आवरण जगत को आवृत कर लेता है | ऐसे में भगवत्स्वरूपजन लोक-कल्याणार्थ पृथ्वी में आते हैं और पुनः धर्म की स्थापना करते हैं | यद्यपि अभी कलि का प्रारंभिक काल ही चल रहा है, फिर भी सर्वत्र विकृति ही विकृति दिखाई पड़ती है, ऐसी स्थिति में भगवद्भक्तों का अवलम्ब कोई महापुरुष ही बनते हैं | ब्रज-वसुन्धरा के पावन स्थल श्रीधाम बरसाना में स्थित राधारानी की नित्य क्रीड़ास्थली गह्वरवन है, जो ब्रह्माचल पर्वत की तलहटी में स्थित है, ऐसी पतितपावनी स्थलियों पर विनाशकारिणी आघात होते रहे, तो एक ऐसे महापुरुष का हृदय द्रवीभूत हुआ जिन्होंने अपने कृतित्त्व व व्यक्तित्त्व की छाप सम्पूर्ण ब्रजमंडल पर ही नहीं अपितु चराचर जीव-जगत पर छोड़ दी | ब्रजोद्धारक के रूप में आपने न केवल वन, उपवन, सरोवर, दिव्य पर्वत, गौमाता या यमुना महारानी के संरक्षण-संवर्द्धन का ही कार्य किया अपितु लोकपावनी भक्ति महारानी को सर्वत्र पुनः स्थापित किया, राष्ट्र ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय लोक-परिनर्तन की छवि प्रस्तुत हुई | भगवन्नाम, रूप, गुण, कथा के माध्यम से जिन्होंने पुनः भागवत- धर्म का साम्राज्य स्थापित करने में विशेष योगदान दिया | ऐसे परमपूज्य श्रद्धेय श्रीरमेशबाबाजी यद्यपि प्रयाग में प्रकट हुए परन्तु उनके ब्रज-प्रेम ने उन्हें बरसाना का अखण्ड ब्रजवासी बना दिया | आज उनके लाखों अनुयायी परोक्षापरोक्ष रूप से भगवन्नाम, रूप, लीला-गुण, धाम, धामी, जन आदि की सेवा कर रहे हैं | ऐसे महापुरुष का कृतित्त्व व व्यक्तित्त्व सर्वग्राह्य हो सके, इस आशय से मानमंदिर सेवा संस्थान से जो मासिक पत्रिका (**श्रीमानमंदिर बरसाना)** प्रकाशित हो रही है, उसमें उनका कुछ चित्रण देना आवश्यक समझा गया | आशा है पाठक लाभान्वित होंगे |

राधाकांत शास्त्री

व्यवस्थापक, मानमंदिर सेवा संस्थान

|| मानमंदिर, गह्वरवन ||

बीस कोस वृंदा विपिन पुर वृषभानु उदार |
तामें गह्वरवाटिका जामें नित्य विहार ||

श्रीबरसाना धाम में मोर कुटी और मानमंदिर के बीच का भाग गह्वरवन है, यह युगल सरकार का नित्य विहार स्थल है | यहाँ श्रीराधामाधव नित्य ही अत्यंत प्रेम भरी अन्तरंग लीलाएँ किया करते हैं | यह ब्रज के समस्त वनों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वन है क्योंकि इसे स्वयं वृन्दावनेश्वरी श्रीराधारानी ने अपने निज कर-कमलों से निर्मित किया है | ब्रज के किसी अन्य वन को श्रीजी के निज करकमलों से निर्मित होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है | वृषभानुपुर शतक में गह्वरवन को प्रणाम करने के मंत्र का इस प्रकार वर्णन किया गया है–

यत्र गह्वरकं नाम वनं द्वन्द्वमनोहरम् |
नित्यकेलि विलासेन निर्मितं राधया स्वयम् ||

"जिस बरसाने में गह्वरवन है, जिसे श्रीराधा ने स्वयं अपने नित्य केलि विलासों से बनाया है |"

श्रीगह्वरवन की लीलाओं का गान सभी रसिकों ने किया है, जैसे –**प्यारी जू आगै चलि गह्वरवन भीतर**

(स्वामी हरिदास जी, केलिमाल)

देखि सखि राधा पिय केलि | ये दोउ खोरि खिरक गिरि गह्वर विहरत कुंवर कंठ भुज मेलि ||

(श्रीहितहरिवंशजी कृत हित चतुरासी)

भूलि परी गह्वरवन में जहाँ सखी न कोऊ साथ |
सोहिलो सुख गहर गह्वर भरयौ भाव अनंत ||

(महावाणी)

सदा वृन्दावन सबकी आदि |
गिरि गह्वर वीथी रत रन में कालिंदी सलिलादि ||

मानगढ़ - यहाँ मानिनी श्रीराधारानी को श्यामसुंदर ने मनाया था, जिससे इस स्थली का नाम 'मानगढ़' हुआ | 'मान' का अर्थ है - रूठना | जब श्रीजी ने मानलीला में श्रीकृष्ण-प्रीत्यर्थ अति विचित्र (परमप्रेमप्रद) मान किया तो श्रीकृष्ण ने उन्हें मनाने के बहुत से उपाय किये, कभी उनके चरणों में मस्तक रखते हैं, कभी उनको पंखा करते हैं, कभी दर्पण दिखाते हैं और कभी विनती करते हैं परन्तु इतना करने पर भी जब मानिनी नहीं मानती हैं तब श्यामसुंदर सखियों का सहारा लेते हैं | सखियाँ जब श्रीजी से मान त्याग करने और श्यामसुंदर से मिलने की विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करती हैं तब वह अपना मान त्यागकर प्रेमपूर्वक मानबिहारीलाल से मिलती हैं | श्रीराधामाधव की ऐसी प्रेम भरी लीला इसी स्थल पर संपन्न हुई है | यह मान किसी लड़ाई या क्रोध से नहीं होता है, यह मान तो प्रेम की एक लीला है | राधारानी श्यामसुंदर के सुख के लिए ही मान करती हैं |

ब्रजाचार्य श्रीनारायणभट्टजी कृत ब्रजभक्तिविलास ग्रन्थ में मानमंदिर को इस मंत्र से प्रणाम किया गया है –

देवगन्धर्व रम्याय राधामान विधायिने |
मानमंदिर संज्ञाय नमस्ते रत्न भूमये ||

(ब्रजभक्तिविलास)

देव-गन्धर्वों से रमणीक, इस दिव्य रत्नमय धरा पर मानिनी ने मान किया, अतः यह स्थान 'श्रीमानमंदिर' नाम से प्रख्यात हुआ, इसे प्रणाम है | ऐसी दिव्य रस से अभिसिंचित महामहिमान्वित श्रीबरसानाधाम में प्रिया-प्रियतम के अन्तरंग नित्यलीला विहार की अति रसमयी स्थली **'श्रीगह्वरवन'** और उनके मानभवन **'श्रीमानमंदिर'** में ब्रज के परम रसिक संत श्रद्धेय **श्रीरमेशबाबाजी महाराज** का आज से पैंसठ वर्ष पूर्व तीर्थराज प्रयाग से पदार्पण हुआ और आज तक यहाँ अखंडवास कर धाम एवं धामी की दिव्य आराधना में संलग्न हैं |

युग-पुरुष संत श्रीरमेशबाबा का कृतित्त्व एवं व्यक्तित्त्व

वज्रादपि कठोराणि मृदूनिकुसुमादपि
लोकोत्तराणांचेत्तांसि को ज्ञातुमर्हति |

महापुरुषों की लीला,उनका स्वभाव भगवान् की तरह ही व्यवहार में देखा जाता है, जिसे सामान्य बुद्धि से समझना कठिन है | नासमझ लोग उनके जीवन-चरित्र को देखकर मोहित, भ्रमित हो जाते हैं जबकि सुधीजन आनन्दित होते हैं |

राम देखि सुनि चरित तुम्हारे |
जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ||

(श्रीरामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड – १२७)

अनन्त श्रीयुत, ब्रजनिष्ठ अति निःस्पृह संत पूज्य श्रीरमेशबाबामहाराज जी का जन्म तीर्थराज प्रयाग(इलाहाबाद) में सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को हुआ था | पूज्य महाराज जी भी ऐसे ही अवतारी पुरुष रहे हैं,जिनकी क्रियाओं से सुधीजन उनके अद्वितीय व्यक्तित्व की गहराई समझ सकते हैं | प्रारम्भ से, जन्म से ही देखिए, बहुत समय तक श्रीबाबा महाराज के पिताश्री बल्देव प्रसाद शुक्ल (जिन्हें लोग 'शुक्ल भगवान्' कहते थे) को पुत्र कीप्राप्ति नहीं हुई तो वे सपत्नीक 'श्रीरामेश्वरम' में गये और वहाँ निराहार रहकर भगवान् शिव की आराधना की | प्रसन्न होने पर शिवजी ने इन्हें स्वप्न दिया कि तुम्हें एक भक्त पुत्र की प्राप्ति होगी, जिसकी कीर्ति देश-विदेश में फैलेगी और जिसके द्वारा लोग भक्तिमार्ग का अनुसरण करेंगे | स्वप्न में ऐसा वरदान प्राप्त होने पर 'शुक्ल दंपत्ति' प्रसन्न होकर अपने घर लौट आये | समय आने पर उन्हें एकपुत्ररत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम 'रामेश्वर प्रसाद शुक्ल' रखा गया | प्राचीन हिन्दू-संस्कृति के अनुसारजब बालक का अन्न-प्राशन संस्कार होता है तो उसके सामने बहुत-सी वस्तुएँ रख दी जाती हैं,उसकीरुचि जानने के लिए कि यह किस वस्तु का स्पर्श करता है | पूज्य माताजी के अनुसार – श्रीबाबा ने सर्वप्रथम 'श्रीमद्भगवद्गीता' का स्पर्श किया, जिससे इनकी आध्यात्मिकरुचि का ज्ञान हुआ |

बाल्यकाल से ही पूज्यश्री अत्यंत मेधावी, धीर-गंभीर और विलक्षण प्रतिभा संपन्न थे | अल्पायु में ही आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा ग्रहण की | पूज्य महाराजजी शास्त्रीय संगीत के असमोर्ध्व गायक रहे हैं, उन्होंने प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से प्रभाकर(संगीत की) परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर 'स्वर्ण पदक' हासिल किया था | भजन-कीर्तन, प्रवचन में महाराज जी की प्रारम्भ से ही रुचि थी;इनकी वाणी में अमोघ आकर्षण था,जो भी एकबार इनको सुन लेता, वह अपना सर्वस्व इनके श्रीचरणों में न्यौछावर कर देता | सन् १९५५ में चित्रकूट में एक विशाल संत-सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें भारतवर्ष के सभी महान् विद्वान महात्मा, बड़े-बड़े दार्शनिक और चारों पीठों के जगद्गुरु शंकराचार्य आदि भी आये थे | उस समय महाराजश्री की अल्पावस्था थी | चित्रकूट-सम्मेलन में पूज्य महाराज जी की अलौकिक विद्वत्ता का परिचय देश के महान् विद्वानों को मिला | इनके हृदय में बचपन से ही भक्ति के साथ ही वैराग्य के भी प्रबल संस्कार थे, जिसके परिणामस्वरुप ईश्वर की खोज में कई बार ये घर

से भागे | एकबार यह १६-१७ वर्ष की अवस्था में ही चित्रकूट के भयंकर जंगलों में, जहाँ सिंह-व्याघ्र आदि अनेकों दुर्दांत पशुओं का भय था, वहाँ भ्रमण करते रहे | रात्रि के गहन अन्धकार में भी भगवान् को पुकारते हुए ये अकेले ही उस भयंकर अरण्य में निर्भय होकर विचरण करते रहे | उस समय वहाँ ऐसी विषम परिस्थितियाँ आईं कि कठिनाई से प्राण रक्षा हुई |अपने इष्टदेव श्रीराधामाधव और उनकी लीलाभूमि ब्रज-वसुंधरा के प्रति प्रगाढ़ अनुराग उन्हें प्रतिपल सर्वत्याग कर इसी रसमयी, तीन लोक से न्यारी ब्रज अवनि की शरण में चले जाने को व्याकुल किये रहता था, जिसके परिणामस्वरुप सन् १९५३-५४ में महाराज श्री सोलह-सत्तरह वर्ष की किशोरावस्था में ही अपने जीवन सर्वस्व प्रेमास्पद श्रीप्रिया-प्रियतम की लीलाभूमि में आ विराजे | ब्रज में भी ब्रजस्वामिनी श्रीराधारानी की क्रीड़ाभूमि **बरसाना** ने इन्हें सर्वाधिक आकृष्ट किया, अतः बरसाने में ब्रह्माचल पर्वत की चार शिखरों में से एक मानिनी के मानभवन श्रीमानगढ़ को ही श्रीबाबा महाराज ने अपनी स्थायी निवास स्थली के रूप में ग्रहण किया |

मानगढ़ पर निवास :-

पूज्य बाबाश्री के मानगढ़ आगमन के समय मानिनी व मानबिहारी की यह रमणीय लीलाभूमि चोर-डाकुओं का आश्रय स्थल बनी हुई थी, विषैले सर्पों और भूत-प्रेतों का भी यहाँ आतंक था; इन समस्त बाधाओं के कारण मानमंदिर पूर्णतया उपेक्षित, एक जीर्णशीर्ण निर्जन खण्डहर के रूप में ऐसा भयानक स्थान बन गया था,जहाँ दोपहर के समय भी भयवश कोई नहीं आता था | ऐसे भयावह स्थल पर श्रीबाबा महाराज पूर्णतया निर्भय होकर अखंड ब्रजवास का दृढसंकल्प लेकर निवास करने लगे | चोर-डाकुओं ने उन्हें यहाँ से हटाने का भरसक प्रयास किया, एकबार १२ बंदूकों के साथ रात्रि के घोर अन्धकार में उन्हें आतंकित किया परन्तु अगणित विकराल परिस्थितियाँ भी पूज्यश्री को विचलित नहीं कर पाईं और यहाँ से उन्होंने अपने कदम पीछे नहीं हटाए | उस समय मानगढ़ पर बिजली और जल जैसी आधारभूत सुविधाओं का भी पूर्णतया अभाव था |

श्रीबाबा महाराज के यहाँ आने के सैकड़ों वर्ष पहले मानमंदिर में रायसिंह बाबा रहते थे | इस मंदिर के नाम से निकटवर्ती गाँवों में दो सौ बीघा जमीन थी किन्तु लोभी (धन-लोलुप) लोगों ने उस जमीन को हड़प लिया और मानमंदिर में प्राचीन अष्टधातु के बने श्रीराधामानबिहारीलाल के श्रीविग्रह को चुराकर बेच दिया |

मानगढ़ के समस्त सुविधाहीन कष्टप्रद जीवन में पूज्य महाराज जी को अनेकों दिव्य अनुभूतियाँ हुईं | एकबार प्रातःकाल वह शास्त्रीय संगीत में राग-रागिनियों के साथ अत्यंत तन्मयता से प्रिया-प्रियतम की लीलाओं का गान कर रहे थे, उसी समय एक अद्भुत संत वहाँ प्रकट हुए और रासमण्डल पर घूमने लगे, उनकी श्वेत दाढ़ी थी, हाथ में सुमिरनी लिए हुए व चरणों में खडाऊँ पहने हुए थे, लगभग आठ फीट लम्बा उनका शरीर था, वह मुस्कुराते हुए श्रीबाबामहाराज से बोले – **'सीताराम...!!'** श्रीबाबा ने भी 'राधेश्याम' कहकर उनका अभिनन्दन किया | थोड़ी ही देर में वह अन्तर्धान हो गए | बाबा प्रियाशरणजी उन दिनों यहाँ टहलने के लिए आया करते थे | जब बाबाश्री ने यह घटना उन्हें बताई तो वह बोले – "अरे ! तू चूक गया, तुझे उनके चरण पकड़ लेना चाहिए था, वह चक्रवर्ती बाबा थे, जो एक सिद्ध संत थे, सबको इन संतों के दर्शन नहीं होते |" साधना की दृष्टि से महाराज जी को एकान्तिक जीवन अतिशय प्रिय था | यदा- कदा वह श्रीजी के दर्शन करने संध्या के समय मन्दिर चले जाते थे | एकबार की बात है, श्रीजी के मन्दिर के प्रांगण में गोस्वामियों का समाज-

गायन हो रहा था | गोस्वामियों में मूर्धन्य गायक श्रीकिशोरीलाल गोस्वामी, जो अवस्था में वृद्ध थे, वह भी समाज में बैठे थे | उन्होंने एक गीत गाया, गाते समय उन्होंने ऊँचे स्वर में एक तान की आलाप लगाई परन्तु उसे पूरी नहीं कर पाये, वृद्धावस्था के कारण उनका गला बीच में ही रुक गया, महाराज जी वहाँ दूर बैठकर सुन रहे थे;जहाँ से गोस्वामीजी का गला रुक गया था, उस तान को वहीं से खींचकर महाराजजी ने पूरा कर दिया, उसे सुनकर सब दंग रह गये | किशोरीलाल गोस्वामीजी सोचने लगे कि ऐसा गवैया कौन है ...!! वहाँ बैठे लोगों ने महाराजजी की ओर संकेत किया |गोस्वामीजी उठकर इनके पास आये और पूछा – "बेटा, इस तान का आलाप तुमने लिया था ?" इन्होंने कहा – 'हाँ |'गोस्वामीजी ने पुनः पूछा कि तुम कहाँ रहते हो? इन्होने बताया कि मैं मानगढ़ रहता हूँ, यह सुनकर गोस्वामीजी बहुत प्रसन्न हुए और कहा – "बेटा ! मेरी एक बात मान लेना |" महाराजजी बोले – 'आज्ञा करें |' उन्होंने कहा कि तू कभी साधु-संग मत करना | महाराजजी को बड़ा आश्चर्य लगा | उन्होंने पूछा –"ऐसा क्यों ? शास्त्रों में तो साधु-संग की बड़ी महिमा बताई गयी है |" गोस्वामी जी ने कहा – "बेटा, वे साधु अब नहीं रहे, अब तो साधु-संग में जाकर देखो, तुम्हें कहीं कृष्ण-चर्चा नहीं मिलेगी | एक-दूसरे की निंदा और आज कहाँ भंडारा है, कहाँ पंगत है, बस, यही सब चर्चाएँ आजकल के साधु-समाज में होती हैं | इसलिए तुम भले ही बारह घंटे सो जाना परन्तु साधु-संग मत करना |" महापुरुषों की वाणी कैसी अमोघ होती है | श्रीबाबामहाराज ने साधु समाज में जाकर देखा तो उन्हें गोस्वामीजी की बात पूर्णतया सत्य प्रतीत हुई | वास्तव में आज साधु-समाज में अधिकांशतया भगवच्चर्चा नहीं होती है | जहाँ देखो राग-द्वेष, गांजा-भांग आदि का दुर्व्यसन, बस यही देखने को मिलता है | **'साधु'** शब्द का अर्थ है –**'साध्नोति इति साधु'** जो साधन करता है, वही साधु है | साधना कैसी, जिससे अन्तःकरण का दुर्व्यसन कम हो, राग-द्वेष के बंधन से दूर हों, वह तो साधु है | जहाँ राग-द्वेष का नंगा नाच हो, नशा करने का दुर्व्यसन हो, कृष्ण-चर्चा न हो, ऐसे साधु का संग करने से लाभ के स्थान पर हानि ही होती है | अतः 'कृष्णविमुख' अर्थात् विकारों से युक्त बंचक वेषधारी साधु का संग नहीं करना चाहिए, जहाँ नित्य-निरन्तर भगवद्गुणगान (कथा-कीर्तन) हो, उन्हीं का संग करें |

एकबार जब महाराज जी मानमंदिर पर रह रहे थे तो भयंकर रूप से अस्वस्थ हो गए, भीषण ज्वर से तपने लगे, उस समय मानमंदिर पर कोई पानी देने वाला भी नहीं था, तीन दिन हो गए; ऐसा लगा कि अब प्राणान्त ही हो जाएगा, तीन दिन बाद एक बालक आया और ब्रजभाषा में बोला –"बाबा ! कैसे पर्‌यो है, बुखार आ गयो दीखै, प्यासौ होयगो, लै पानी पी ले |" ऐसा कहकर उसने श्रीबाबा को जल दिया तो बिना दवा के ही उनके शरीर में चेतना आ गयी,रोग दूर हो गया, फिर शाम को बाबा महाराज मानपुर गाँव में भिक्षा लेने गए, भिक्षा की रोटी खाई तो स्वस्थ हो गए; यह था कृष्ण-कृपा का साक्षात् चमत्कार |

प्रारम्भिक अवस्था में मानगढ़ निवास करते समय श्रीबाबा राजस्थान के अलवर, जयपुर आदि स्थानों में प्रचार करने भी गए | उस समय उनकी वाक्-शक्ति इतनी प्रखर थी कि एक ही दिन में उनके कई कार्यक्रम होते थे | एकबार अलवर में तो उन्होंने एक ही दिन में तैंतीस कार्यक्रमों में प्रवचन किया | किसी जिज्ञासु ने उनसे पूछा – "महाराज जी ! कृष्ण की प्राप्ति कैसे हो ?" यह सुनकर इनके संस्कारों ने पलटा खाया और वह अपने मन में सोचने लगे कि क्या तुम्हें कृष्ण-प्राप्ति हो गयी है ? इस विचार के आते ही उनका मन बेचैन हो उठा और तुरंत उन्होंने सभी कार्यक्रम स्थगित कर

अचानक बरसाना लौट जाने का विचार बना लिया | जिनके यहाँ रुके थे, उनके यहाँ कई गाड़ियाँ थीं, उनसे श्रीबाबा बोले कि आप मुझे कुछ देर के लिए गाड़ी दे सकते हैं, उन्होंने कहा– "हाँ-हाँ, महाराज जी ! ये सब आपकी सेवा के लिए हैं, आप कोई भी गाड़ी लें |" पूज्य महाराज जी बोले – "मुझे गाड़ी नहीं चाहिए, मैं चाहता हूँ कि मुझे ब्रज-सीमा 'डीग' में छोड़कर आ जायें |" उन्होंने कहा – "महाराज ! कल तो आपके ५ जगह कार्यक्रम हैं, उसके बाद पहुँचवा देंगे |" महाराज जी बोले – "नहीं, मुझे अभी जाना है, यदि आप गाड़ी से मुझे ब्रज नहीं भेजते हैं तो मैं पैदल चला जाऊँगा |" पूज्य महाराज का ऐसा दृढ़ निश्चय देखकर उन्होंने उनकी रुचि के अनुसार डीग ही नहीं बरसाने पहुँचा दिया |

मानगढ़ में एकबार प्रातःकाल रासमंडल पर बैठे महाराज जी बाहर के भक्तों के आये हुए पत्रों का अवलोकन कर उनका जवाब लिख रहे थे | इसी बीच ब्रज की परमनिधि पूज्य बाबाश्री प्रियाशरण महाराज आ गए, जिनको महाराजश्री गुरु-रूप में मानते थे, उन्हीं से महाराज जी ने ब्रज के रसिकों की वाणियों का, ब्रज के साहित्य का अध्ययन किया था | पूज्य बाबा प्रियाशरण महाराज जी ने पूछा – "ये क्या कर रहे हो ?" इन्होंने सहज में उत्तर दिया – "बाबा ! कुछ पत्र आये थे, उनका जवाब लिख रहा हूँ |" गुरुदेव महाराज ने कहा –"इस तरह तुम ब्रज में अखंडवास नहीं कर पाओगे | ब्रजवास करते समय पत्र लिखोगे तो तुम्हें बाहर का चिंतन होगा जबकि ब्रजवास केवल शरीर से नहीं होता है अपितु मन भी ब्रज में श्रीराधामाधव के लीला-गुणों में निमग्न रहना चाहिए | यदि मन ब्रज के बाहर का चिंतन करता है तो यह यथार्थ ब्रजवास नहीं है |" गुरुदेव की यह वाणी पूज्य महाराज जी को ऐसी चुभ गयी कि उन्होंने उनके सामने ही वे सब पत्र फाड़ दिए और संकल्प किया कि भविष्य में किसी को कोई पत्र नहीं लिखूँगा | अपने इस दृढ़ निश्चयपर बाबा महाराज आज भी अडिग हैं और तब से आजतक कभी वह ब्रज के बाहर नहीं गए | लगभग चौसठ वर्ष से अखंड ब्रजवास कर रहे हैं |

मानपुर ग्राम से भिक्षा व कीर्तन का शुभारम्भ :-

अपने प्रारम्भिक काल में जब पूज्य श्रीबाबा मानगढ़ पर निवास कर रहे थे तो उन्हें निकटवर्ती ग्रामों से नाम-संकीर्तन की ध्वनि नहीं सुनाई पड़ती थी, उन्हें प्रतीत हुआ कि यह कैसा ब्रज है, जहाँ भगवन्नाम की ध्वनि ही नहीं सुनाई पड़ती है, अतः उनके पास आने वाले आरंभिक ब्रजवासी श्रीप्रकाशजी से एकबार बाबाश्री ने कहा कि मुझे आपके गाँव में संकीर्तन का प्रचार करना है, क्या आप मेरा सहयोग कर सकते हैं ? प्रकाश जी के सकारात्मक उत्तर से संतुष्ट होकर श्रीबाबा महाराज ने उनको और कुछ थोड़े से अन्य ब्रजवासियों को साथ लेकर मानपुर ग्राम में संकीर्तन करना प्रारंभ किया | श्रीबाबा महाराज तो पूर्णतया निष्किंचन-वृत्ति से धनादि के स्पर्श से भी सर्वथा दूर रहा करते थे और उनके सहयोगी ब्रजवासी भी अत्यधिक निर्धन थे अतः कीर्तन करने के लिए उनके पास वाद्ययंत्रों का भी अभाव था | धीरे-धीरे करतालों के साथ मानपुर ग्राम में एक कुएँ के पास श्रीबाबा महाराज द्वारा कीर्तन का शुभारम्भ किया गया, फिर कुछ समय पश्चात् एक ढोलक की भी व्यवस्था हो गयी किन्तु कुछ काल व्यतीत होने पर कुछ लोगों ने कीर्तन का विरोध करना भी प्रारम्भ कर दिया | विरोध होने पर कुछ समय तक बाबा महाराज ने मानमंदिर के व्यवस्थापक श्रीराधाकान्तजी के पिता श्रीप्रकाशजी के सहयोग से उनके घर पर भी काफी समय तक कथा और कीर्तन का प्रचार किया | लगभग १९६८ की बात है जब महाराज जी मानपुर में प्रकाश जी के घर कीर्तन करते थे तो बहुत-सी गोपियाँ उनके घर पर एकत्रित हो जाती थीं | उन दिनों पूज्य महाराज जी ने श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के-

"बर्हापीडंनटवरवपुःकर्णयोःकर्णिकारंबिभ्रद्वासःकनक कपिशंवैजयन्तींचमालाम्।

रन्ध्रान्वेणोरधरसुधयापूरयन्गोपवृन्दैर्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद्गीतकीर्तिः॥"

(भागवत १०/२१/५)

इस श्लोक की छः माह तक व्याख्या की थी | घर-घर में कीर्तन की धूम मचने लगी थी परन्तु कुछ लोगों को यह कथा और कीर्तन अच्छा नहीं लगा और उन्होंने इसका विरोध शुरू कर दिया | विरोधियों ने सोचा कि बाबा मानपुर गाँव आयें तो उन्हें यहीं पर समाप्त कर दिया जाए | आपस में लड़ाई छिड़ गयी | प्रकाश जी व इनके साथी नरोत्तम सिंह जो गरीब, शरीर से ताकतवर परन्तु भक्त थे | दूसरे पक्ष के लोग सशक्त थे, बड़े कुनबा वाले थे, जनशक्ति व धनशक्ति इनके पास अधिक थी | पूज्य महाराज जी ने गरीबों का सदा साथ दिया | विरोध दिनोंदिन अधिक बढ़ता गया | महाराज जी पहले आर. एस. एस. के सक्रिय कार्यकर्ता रहे थे इसलिए अस्त्र-शस्त्र की विद्या में भी पारंगत थे | उन्होंने आत्मरक्षा हेतु इन गरीब श्रद्धालु भक्तों को शस्त्र विद्या का अभ्यास कराया जिसके फलस्वरूप लड़ाई में २५-३० लोग भी इन २-४ आदमियों को चाहते हुए भी नष्ट नहीं कर सके | विरोधी लोगों को अपने कुनबा की जनशक्ति व धनशक्ति का बड़ा गर्व था इसलिए समझते थे कि हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा और एक दिन बड़े गर्व की वाणी में उन लोगों ने महाराज जी से कहा था कि चिकसौली में बाबूलाल मास्टर (डॉ. श्री रामजी लाल शर्मा के पिताजी) व मानपुर में प्रकाश के परिवार को तो हम चुटकियों में मसल देंगे | उस समय बाबा महाराज ने बड़ी निडरता से कहा था – "देखो, चिकसौली में बाबूलाल का व मानपुर में प्रकाश का-ये दो घर ही चमकेंगे |"संतों की वाणी कभी खाली नहीं जाती है | प्रकाशजी मानपुर ग्राम के लगातार दस साल तक प्रधान रहे और प्रत्येक नवरात्रि में उनके घर पर चौबीस घंटे अखंड हरिनाम-संकीर्तन होता है और दूसरे चिकसौली गाँव में बाबूलाल जी के परिवार श्रीरसमंदिर में चार सदस्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कथाव्यास हैं जो निष्काम भाव से निःशुल्क भगवन्नाम-प्रचार में लगे हुए हैं, जिनके घर नित्य ७००-८०० भक्त भोजन करते हैं |

पूज्यश्री ने कीर्तन-प्रचार के साथ ही ब्रज में निवास करने वाले साधुओं के लिए जीविका-निर्वाह हेतु अनिवार्य वृत्ति भिक्षा (मधुकरी वृत्ति) का भी शुभारम्भ मानपुर ग्राम से किया | श्रीबाबामहाराज ब्रजवासियों के घर मधुकरी के लिए कीर्तन करते हुए जाते थे, उनके द्वारा मानपुर ग्राम में भिक्षा के साथ ही घर-घर में कीर्तन का प्रचार हुआ | कुछ विरोधी तत्वों के द्वारा जब श्रीबाबामहाराज के द्वारा मानपुर ग्राम में कीर्तन कराये जाने का अत्यधिक विरोध किया गया तो उन्होंने मानमंदिर में संकीर्तन का शुभारम्भ किया |

मानपुर ग्राम से मानगढ़ में संकीर्तन की वापसी:–

उस समय मानपुर ग्राम के थोड़े-से ब्रजवासियों के साथ पूज्यश्री मानमंदिर के प्रांगण में एक प्राचीन रासमंडल पर संकीर्तन किया करते थे | वह आवेश के साथ अत्यधिक तीव्र गति से २-३ घंटे अर्द्धरात्रि तक नृत्य किया करते थे और उनके चारों ओर ब्रजवासी मंडलाकार घूमते हुए नृत्य करते थे | उस समय जो ब्रजवासी श्रीबाबा के साथ मानमंदिर के कीर्तन में सम्मिलित हुआ करते थे, वे कृषक थे और दिन भर अपने खेतों में हल के साथ कठोर परिश्रम से कृषि कार्य किया करते थे और रात्रि में मानगढ़ आकर अत्यंत उत्साह से श्रीबाबामहाराज के साथ कीर्तन किया करते थे | कुछ समय पश्चात् मानपुर और चिकसौली ग्रामों के कई बालक भी महाराजश्री की सन्निधि में आकर सत्संग, संकीर्तन और शिक्षा का लाभ लेने लगे | इन बालकों के हृदय में महाराज जी ने ईश्वर-भक्ति के साथ-साथ देशभक्ति के भी क्रांतिकारी विचारों का बीजारोपण किया | ये सभी बालक गुरुदेव की ओजस्वी शिक्षा से अनुप्राणित होकर भगवद्भक्ति, देशभक्ति के साथ-साथ

ब्रज-सेवा के कार्यों में भी उत्साह से संलग्न हो गए | अभिभावकों को भय था कि उनके बालक पूज्यश्री के सानिध्य के प्रभाव से कहीं साधु न बन जाएँ, इसलिए उन्होंने अपने बच्चों को श्रीबाबा के पास आने से बहुत रोका किन्तु वे बालक भी पूज्यश्री के प्रेम और उनकी क्रांतिकारी शिक्षा से इतने उत्साहित थे कि घर वालों के तमाम प्रतिबंधों के बावजूद भी उन्होंने श्रीगुरुदेव का साथ नहीं छोड़ा |

मानगढ़ के संकीर्तन में भी बाधाएँ:-

मानगढ़ पर पूज्यश्री के द्वारा जिस कीर्तन का शुभारम्भ किया गया, उसमें आवेश के साथ मध्यरात्रि तक उद्दामवेग से नृत्य होता था, संगीत के वाद्ययंत्रों जैसे - बेला, ताशों आदि की ध्वनि सुदूर नीमगाँव तक सुनाई पड़ती थी | कुछ संकीर्ण विचार के लोगों को यह संकीर्तन पसंद नहीं आया और उन्होंने इस पर भी रोक लगाने का भरपूर प्रयास किया | पुलिस के पास रिपोर्ट की गयी, मानगढ़ पर पुलिस वाले भी आये परन्तु श्रीबाबा महाराज के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने का उनका साहस नहीं हुआ | इसी प्रकार कुछ विरोधी तत्वों ने कीर्तन में बाधा उत्पन्न करने के लिए तामसी अनुष्ठान किये, एकबार संकीर्तन के समय एक प्रज्वलित घात को छोड़ा गया, वह मानगढ़ में आकर कीर्तन करने वालों के ऊपर घूमती रही, फिर वहाँ से चली गयी, किसी को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकी |

महापुरुषों का आश्रय और गह्वरवन में निवास :-

ब्रजवास करते समय श्रीबाबा महाराज ब्रज के कई संतों के संपर्क में आये | पूज्य श्रीप्रियाशरण बाबा महाराज और गह्वरवन के विलक्षण संत पंडित श्रीहरिश्चन्द्र जी महाराज का श्रीबाबामहाराज के ऊपर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा | इन दोनों ही महापुरुषों को आपने अपने गुरुदेव के रूप में स्वीकार किया | १९५७-५८ में ऐसा संयोग बना कि महाराज जी ने गह्वरवन में गह्वरवनकुण्ड (राधासरोवर) के पास एक कुटिया बनवाई, जिसमें चारों ओर बाउण्ड्री थी और एक दरवाजा था | गह्वरवन में रहने का कारण यह था कि यहाँ दो विलक्षण संत रहते थे –

१. पंडित हरिश्चंद्र जी महाराज, जो काशी-नरेश के राजगुरु के पुत्र थे, वह अत्यंत उद्भट विद्वान् परन्तु भावुक संत थे | वह पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय के थे |

२. दूसरे थे - मौनीजी महाराज, जो न कभी गाँव में भिक्षा को जाते, न किसी से कुछ माँगते; वह रामोपासक (श्रीजानकीजी के भक्त) थे,जब इन्हें भूख लगती तो पेड़ों की पत्तियाँ पीसकर खा लेते थे | गह्वरवन में रहने से महाराजश्री को इन परम प्रेमी संतों का सानिध्य मिला |

एकबार महाराजजी ने पंडित हरिश्चंद्र जी से प्रार्थना की – “बाबा !आप मुझे कुछ सेवा बता दीजिए |”सेवा माँगने का भाव यह था कि इसी बहाने ऐसे महापुरुष के पास रहने का कुछ समय मिल जाये | इनकी श्रद्धा व जिज्ञासा देखकर उन्होंने कहा कि तुम रात को अंगीठी जला दिया करो | उस समय जाड़े के दिन थे | ये रोजाना बड़ी प्रसन्नता से अंगीठी जला दिया करते, उसमें पंडित हरिश्चंद्रजी रात में हाथ सेंक लिया करते थे |एक दिन बाबा महाराज ने उनसे कहा कि आपकी आज्ञा हो जाए तो रात में यहीं रुक जाया करूँ | पंडित हरिश्चंद्र जी ने कहा कि हम अपने पास तो किसी को रखते नहीं हैं | तुम्हारी बहुत इच्छा है तो नीचे सीढ़ियों के पास रह लिया करो परन्तु वहाँ दो काले सर्प रहते हैं | आज्ञा पाकर महाराज जी ने वहाँ रुकना शुरू कर दिया;अंगीठी की सेवा करते और रात भर नींद नहीं आती क्योंकि सर्पों की सांय-सांय आवाज सुनाई पड़ती थी परन्तु वहीं पड़े-पड़े भजन करते रहते | जब पंडित हरिश्चंद्र जी का देहावसान हुआ तो उनका दोहनी कुण्ड

के पास अन्तिम संस्कार किया गया था | महाराजजी अपने पिताजी की मृत्यु पर नहीं रोये परन्तु इन महापुरुष के प्रति तो पिता से भी अधिक ममता थी | दोहनीकुंड जहाँ उनका अंतिम संस्कार हुआ, वहाँ महाराजजी प्रतिदिन चले जाते और महीनों तक उनकी याद में रोते रहते |

दूसरे संत श्रीमौनीजी महाराज थे, ये भी बड़े विलक्षण थे, किसी से कुछ नहीं लेते थे परन्तु रस मंदिर में पंडित रामजीलालशर्माजी की माताजी और बहिन लक्ष्मीजी व किशोरीजी पर उनकी अद्भुत कृपा थी | ये लोग उनके लिए कुछ ले जातीं तो स्वीकार कर लेते और कभी कुछ इच्छा होती तो कह भी देते थे | पूज्य महाराज जी की माताजी का वह बड़ा सम्मान करते थे | एकबार की बात है, लक्ष्मीजी व किशोरीजी मौनीजी महाराज को देने के लिए कुछ पकवान व खीर ले गयीं थीं, उन्होंने ले लिया | कुछ समय बाद पूज्य महाराज जी की माताजी कुछ खीर लेकर गयीं तो उन्होंने कहा कि तेरी चेली दे गयी थी, लेकिन जब माताजी ने खीर लेने का बहुत आग्रह किया तो मौनीजी ने कहा कि अच्छा, इस बर्तन में कर दे | (वहाँ द्वार के पास एक मिट्टी का कटोरा पड़ा था, जिसको कुत्ता चाट रहा था | उन्होंने माताजी से कहा कि इसी में डाल दे |) माताजी ने कहा – "बाबा ! इसे तो कुत्ता चाट रहा है |" मौनी जी बोले – "ये ब्रज का कुत्ता हमसे तो बहुत अच्छा है |" माताजी ने खीर उसी मिट्टी के कटोरे में डाल दी और मौनी बाबा माताजी के सामने ही उस खीर को खाने लगे, ऐसे विलक्षण संत थे | कोई इन्हें प्रणाम करता तो अपने ही गाल पर चाँटे मारने लगते, अपने को कभी डंडा से पीटते, यह देखकर लोग इन्हें प्रणाम करने का भी साहस नहीं करते थे | अन्तिम समय में कैसी विलक्षण घटना हुई कि मौनी जी महाराज के शरीर से अग्नि प्रकट हुई – उनका पैर आग में जल रहा था और वह मुस्कुरा रहे थे | रस मंदिर की किशोरीजी घर से कुण्ड पर होते हुए माताजी के पास जा रहीं थीं तो उन्होंने सबको बताया कि मौनी बाबा जल रहे हैं | लोग वहाँ पहुँचे, आग देखकर जल डाल दिया, उससे उनके शरीर पर फफोले पड़ गये | लोग उनको बरसाना के अस्पताल में ले गये, वहाँ डॉक्टर एन. के.शर्मा थे, वह कई दिन से सस्पेण्ड पड़े थे, उन्होंने उनकी सेवा की, यद्यपि वह बच नहीं सके परन्तु डॉक्टर साहब को संत-सेवा का फल मिला और वह एक ही सप्ताह में फिर से अपनी नौकरी में आ गये | मौनीजी के उपलक्ष्य में पहली बार पूज्य महाराजजी ने **भागवत सप्ताह कथा** भी कही थी |

गह्वरवन में एक संत और थे, उनका नाम था - गोवर्धनदासजी महाराज, ये पढ़े-लिखे नहीं थे परन्तु बड़े साहसी थे, गह्वरवन की रक्षा के लिए बड़े सजग रहते थे, पूज्य महाराज जी के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे | एकबार इन्होंने महाराज जी के सामने अपनी इच्छा रखी कि आप हमें भागवत सप्ताह सुना दें, महाराज जी राजी हो गये | वे भिक्षा में आटा लाते थे और ठाकुरजी की रसोई बनाते, उसी बचे आटे के पैसों से सेवा के अन्य खर्चे चलाते | उनके पास थोड़ा बहुत पैसा था, वह ब्रजवासियों को उधार दे दिया था, जब उन्होंने पैसा माँगा तो उन्हें रात में काट दिया गया | उन्होंने मानपुर गाँव के भूतपूर्व प्रधान प्रकाश सिंह, जो पूज्य महाराज जी के विशेष सम्पर्की थे, उनसे स्वप्न में गोवर्द्धनदास ने कहा – "प्रकाश ! मैं बहुत दुःखी हूँ, कष्ट में हूँ | महाराज जी से प्रार्थना करो कि वे मेरे लिए भागवत सप्ताह कह दें, मेरी मुक्ति हो जायेगी |" कालान्तर में कई वर्ष बाद संयोग बना, गह्वरवन में उनके लिए भागवत सप्ताह महाराज जी ने कही और परिणाम ये हुआ कि उनकी मुक्ति हो गयी | उन्होंने स्वप्न में प्रकाश जी से कहा – "भाई प्रकाश !

महाराज जी की कृपा से अब मुझे कष्ट से छुटकारा मिल गया, अब मैं बहुत सुखी हूँ।"

बाबा की पूज्य माता जी और दीदी जी का गह्वरवन-वास:–

घर से निकलने के ४-५ साल बाद पूज्य महाराज जी की माताजी को पता चला कि वे बरसाने में हैं | ये माता जी के इकलौते बेटे थे | जब ये ४-५ वर्ष के थे, उसी समय पिताजी का स्वर्गवास हो गया था, वह बहुत बड़े ज्योतिषी थे और माताजी से कह गये थे कि यह तुम्हारे पास नहीं रहेगा, या तो विदेश जायेगा या कोई योगी बनेगा | माताजी महाराजजी की खोज करती रहीं, कहीं पता नहीं चला, रोते-रोते आँखों की दृष्टि भी चली गयी | इलाहाबाद के पास मनौरी नामक एक जगह है, वहाँ एक विशाल पीपल का वृक्ष था, जिस पर एक ब्रह्मराक्षस रहता था, पुजारी उसकी पूजा करते थे, उनको ब्रह्मराक्षस सब कुछ बता देता था | माताजी एक वैश्य परिवार के साथ वहाँ गयीं | उसने कहा कि मैं तो आज से तीसरे दिन कुछ बता पाऊँगा | वैश्य-दम्पत्ति को तो उसने वापिस भेज दिया | माताजी ने कहा कि मैं तो अब दुबारा यहाँ नहीं आ सकती | पुजारी को माताजी की दयनीय अवस्था देखकर दया आ गयीऔर उसने कहा – "माताजी ! आप रुकें, मैं स्नान करके आता हूँ |" वह पुजारी स्नान करके आये, ध्यान करने बैठे और पूछा – "माताजी ! क्या बात है?" उस समय उनकी आँखें अंगार की तरह चमक रही थीं | माताजी इतना ही कह पायीं थीं कि मेरा एक लड़का ..... | पुजारीजी ने आँखें बंद कीं, ध्यान किया और दो मिनट बाद बोले – "माताजी ! जहाँ तुम्हारा लड़का है, वहाँ मेरी पहुँच नहीं है, अगर और किसी जगह होता तो मैं अभी दो मिनट में तुम्हारे पास लाकर रख देता | माताजी ! आप मुझे ही अपना पुत्र मान लें, मैं जीवन भर आपकी सेवा करूँगा | उन्होंने यह भी बताया कि इस समय वह बरसाना, मानमन्दिर, गह्वरवन में है |" माताजी यह कहकर कि जब मेरे पास कुछ नहीं रहेगा, तब मैं आपके पास आ जाऊँगी | उसके बाद माताजी बरसाना आयीं, पता लगाते-लगाते महाराजश्री की कुटी, गह्वरवन में आ गयीं | एक रात रुकीं, दूसरे दिन महाराजजी ने उनको विदा कर दिया | बीच-बीच में जब भी इच्छा होती तो अपने बेटे से मिलकर चलीं जातीं | पूज्य बाबा प्रियाशरणजी महाराज को जब पता लगा कि इनकी माँ आती है और ये उसे यहाँ रहने नहीं देते तो बाबा प्रियाशरण जी महाराज ने कहा – "देखो जी, माँ का तिरस्कार करने से वैराग्य नहीं होता है, वह बेचारी यहाँ आती है, यदि यहाँ रुकना चाहे तो उसे रुकने दो, उसका भी ब्रजवास हो जायेगा |" इसके बाद माताजी यहाँ आतीं और जितने दिन रुकना चाहतीं, रुक लेतीं थीं | बाबा की बड़ी बहिन थीं, जिन्हें बाबा महाराज 'दीदी' कहते थे, उनका नाम था - तारकेश्वरी त्रिपाठी | तारकेश्वरजी का तप करने के फलस्वरूप इनका जन्म हुआ था, इसलिए ये नाम रखा गया था, अपनी बहिन के बाबा इकलौते भाई थे | दीदी की हर समय यही इच्छा रहती थी कि मेरा भाई लौटकर घर आ जाये, वह हमेशा इसी प्रयत्न में रहती थीं | १९६३ की बात है, दीदी बनारस में थीं, प्रो.दूधनाथ चतुर्वेदी बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे, बाद में वे वाइस चांसलर भी बने, दीदी के प्रभाव से वह कुछ रिसर्च स्कालरों के साथ महाराज जी के पास बरसाना, गह्वरवन में आये | इधर दीदी ने महाराजजी को पत्र लिखा ताकि ये उनसे प्रेम से मिल लें | पूज्य महाराज जी अंदर कुटी में थे | वे अंदर कुटी में महाराज जी के पास बैठे | प्रो.दूधनाथ चतुर्वेदी जी ने पहले तो महाराज जी को बहुत लैक्चर दिया कि आप ऐसे सम्मानीय परिवार से हैं, आपको चाहिए कि अपनी भारतीय-संस्कृति का विदेशों में प्रचार करें, संत रामतीर्थ हुए, विवेकानन्द हुए, जिन्होंने भारत का नाम रोशन किया,

आप भी कर सकते हैं, विदेश जाने का जो खर्च होगा, हम वहन करेंगे; फिर उन्होंने पूछा कि आप भ्रमण क्यों नहीं करते हैं, यहाँ एक कोने में पड़े रहने से क्या मिलेगा ? महाराज जी ने उत्तर दिया – "जीव अनादि काल से इस भवाटवी में भ्रमण करता आ रहा है, कहाँ तक भ्रमण करेगा, अब आवश्यकता है चिरशांति की, जो एक देशीय होकर एक स्थान से ही प्राप्त हो सकती है | दूसरी बात यह कि प्रचार कोई करने की वस्तु नहीं है | अन्तःकरण की संचरणशील शक्ति का नाम ही प्रचार है | सूर्य कभी नहीं कहता कि मेरे अंदर प्रकाश है, पर उसके उदय होते ही सारा अन्धकार ध्वंस हो जाता है | पहले हम साधना करके शक्ति अर्जन करें और वह एक देशीय होकर एक स्थान से ही सम्भव हो सकती है | मैं तो आपसे भी प्रार्थना करूँगा कि आप भी एकदेशीय होकर चिरशान्ति की प्राप्ति करें |" यह सुनकर प्रो.दूधनाथ चतुर्वेदी नतमस्तक हो गये और बोले कि आप तो पूर्ण हैं, इसीलिए हमें आपके पास आना पड़ता है | यह सुनकर महाराज जी बोले – "मैं प्रमादी हूँ, कहीं जाता नहीं हूँ, अतः आप अनुग्रह करने आये हैं |" प्रोफेसर साहब समझ गए कि महाराज जी अपने दृढ़निश्चय से डिगेंगे नहीं | पूज्य दीदी जो कानपुर में ज्वाला देवी डिग्री कालेज में सामाजिक शास्त्र की विभागाध्यक्ष थीं, वह भी बरसाना बीच-बीच में आती रहीं और अन्त में उन्होंने समय से पहले ही रिटायरमेंट ले लिया और बरसाना में ही अखण्डवास किया और यहीं अपनी ऐहिक लीला का संवरण किया | उनकी स्मृति में मानमन्दिर में 'पूज्य दीदीजी गुरुकुल' चल रहा है, जिसमें लगभग ८० विद्यार्थी निःशुल्क आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं |

परम पूज्य बाबा प्रियाशरणजी महाराज, जिन्हें बाबा गुरु रूप में मानते थे, उनके निर्देशानुसार अब माताजी को बरसानावास करने की छूट हो गई | नीचे जो कुटी बनाई गयी थी, वहाँ माताजी रहने लगींऔर बाबा महाराज पुनः मानमन्दिर पहुँच गये, वहाँ रात्रि में नित्य कीर्तन शुरू कर दिया गया | नीचे गह्वरवन की कुटी पर, जहाँ माताजी रहतीं, नित्य महाराज जी उतरते और माताजी को प्रणाम करते तथा भागवत का अध्ययन कराते | बच्चे, साधु और अध्यापक, कुल मिलाकर लगभग २५-३० व्यक्ति नित्य उनसे भागवत का अध्ययन करते थे और रात्रि को वहाँ कीर्तन होता था | परम पूज्या माताजी ने गह्वरवन में ३५ वर्ष अखण्ड निवास किया और अन्त में २००७ में उनका पार्थिव शरीर गह्वरवन की ब्रजरज में मिल गया | माताजी के देहावसान के बाद उनकी स्मृति में माताजी गौशाला की स्थापना २००७ में की गई | भूमि-पूजन के समय पूज्य महाराज जी ने कहा था कि यदि तुम लोग श्रद्धा और निष्ठा से गौ-सेवा करोगे तो यह विश्व की प्रसिद्ध गौशाला होगी | जब गौशाला शुरू की गई, उस समय मात्र ३-४ गायें थीं | संतों की वाणी अमोघ होती है, वह कभी खाली नहीं जाती; **श्रीब्रजशरणजी** के रूप में एक कर्मठ और ईमानदार संत हमारे बीच में प्रभु कृपा से महाराजश्री की वाणी को सार्थक करने के लिए यहाँ आये हैं, इनके कुशल नेतृत्व, सुष्ठु कार्य संचालन के फलस्वरूप आज माताजी गौशाला में ५० हजार से अधिक गौवंश मातृवत् पल रहा है |

संध्याकालीन रासरसमय संकीर्तनाराधन व नारीशक्ति को प्रोत्साहन :–

परम श्रद्धेय श्रीबाबामहाराज अपनी आराध्या श्रीकृष्णवल्लभा श्रीराधारानी के पदकमलों का पूर्ण आश्रय लेकर सतत् उनकी आराधना में संलग्न रहते हैं | उनकी आराधना का प्रमुख स्वरूप है - **संकीर्तन**, जिसे कलिकाल में समस्त भक्तिशास्त्रों और महापुरुषों ने जीव की सद्गति का एकमात्र साधन निर्धारित किया है | अपने मानगढ़ आगमन से ही महाराजश्री ने संकीर्तन-आराधना का नृत्य और गान के माध्यम से जो शुभारम्भ किया था,

उसने आज अत्यंत विशाल रूप ग्रहण कर लिया है | सैकड़ों की संख्या में छोटी और बड़ी उम्र की साध्वियाँ प्रतिदिन मानगढ़ के संकीर्तन भवन रसमंडप में श्रीबाबामहाराज के पद-गायन में डेढ़ घंटे तक ठाकुर-श्रीजी को रिझाने के लिए प्रेम-दिवानी मीराबाई की तरह नृत्याराधना करती हैं | श्रीबाबामहाराज द्वारा संरचित **रसिया-रासेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका (बरसाना), भक्तद्वय-चरित्र** इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित अनुपम काव्यमय कृतियाँ हैं | बाबाश्री किसी को अपना शिष्य-शिष्या नहीं बनाते हैं, धन के संग्रह-परिग्रह से सर्वथा दूर रहते हैं | स्त्री या पुरुष जो भक्तिमय जीवन बिताने के इच्छुक हैं, यदि मानगढ़ पर इसी उद्देश्य से निवास करना चाहते हैं तो उदार शिरोमणि श्रीबाबामहाराज की ओर से सबको इसका अवसर प्रदान किया जाता है | पुरुषजन संसार से उपराम होकर भक्तिमय जीवन व्यतीत करने के लिए मानगढ़ पर निवास करते हैं तथा नारी जाति के भक्तिमय जीवन के संपोषण हेतु पूज्यश्री के द्वारा गह्वरवन में ही विशाल भवन रसकुञ्ज का निर्माण कराया गया है | पूर्व में बाबाश्री स्वयं ही इसी स्थान पर कुटिया का निर्माण कर श्रीजी की रसोपासना में निमग्न थे किन्तु वर्तमानकाल में उनके द्वारा यह स्थान गोपी स्वरूपा आराधिकाओं के आराधनामय जीवन हेतु प्रदान किया गया है |

सदियों से नारी जाति का पुरुष प्रधान समाज के द्वारा बहुत अधिक शोषण किया गया है, उनका उपयोग केवल अपनी स्वार्थ-लिप्सा और भोग-लिप्सा की पूर्ति हेतु ही किया गया | भौतिक जगत में तो स्त्री का सब प्रकार से शोषण हुआ ही, आध्यात्मिक जगत में भी उन्हें स्वीकार नहीं किया गया | त्रेतायुग में बड़े-बड़े तपस्वी ऋषियों द्वारा दीन-हीन भक्ता शबरी का अपमान किया गया, उन्हें भक्तिमय जीवन अपनाने का समुचित अवसर केवल परम उदार मतंग ऋषि द्वारा ही प्रदान किया गया | कलिकाल में गोपिकावतार मीराबाई को कृष्णभक्ति करने पर कितनी भीषण यन्त्रणाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, यह सभी को विदित है | आज भी विरक्त साधु समाज 'नारी जाति' को हेय और घृणा की दृष्टि से देखता है, वैष्णव सम्प्रदायों के आश्रमों में भी 'नारी जाति' के आध्यात्मिक विकास हेतु अलग से उनके निवास करने की सुविधा की कहीं व्यवस्था नहीं है | स्त्रियों के कथा-वाचन पर भी पुरुष प्रधान समाज नाक-भौं सिकोड़ता रहता है, उन्हें व्यासासन पर बैठकर कथा करने का अधिकारी नहीं समझता जबकि वास्तविकता इससे बिलकुल परे है | श्रीमद्भागवत में नव योगेश्वर व राजा निमि के संवाद में योगेश्वर चमस जी ने कहा – **दूरेहरिकथाःकेचिद्दूरेचाच्युतकीर्तनाः |**

स्त्रियःशूद्रादयश्चैवतेऽनुकम्प्याभवादृशाम् ॥

(भागवत ११/५/४)

'स्त्रियाँ और शूद्र 'भगवत्कथा-कीर्तन' से दूर हो गए हैं, वे आप जैसे भगवद्भक्तों के दयापात्र हैं | आप लोग उन्हें कथा और कीर्तन की सुविधा देकर उनका उद्धार करें |' इस प्रकार के शास्त्र-वाक्यों के प्रमाणानुसार उनसे प्रेरणा लेकर श्रीबाबामहाराज ने भगवत्शरणागति और भक्ति की छत्रछाया में आकर सम्पूर्ण जीवन भगवान् के लिए समर्पित करने की अभिलाषा में दर-दर ठोकर खाती, विरक्त समाज द्वारा ठुकराई गयी नारी जाति को सुदुर्लभ मानव-जीवन को सार्थक बनाने का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सुअवसर प्रदान किया है और आज लगभग सवा सौ बालिकाएँ व युवतियाँ श्रीबाबामहाराज के मार्गदर्शन में भक्तिमती मीराबाईजी के सर्वत्यागमय श्रीकृष्णप्रेमयुक्त जीवन को आदर्श मानकर उन्हीं के पदचिन्हों पर चलने का अनुकरण कर रही हैं | सांयकालीन आराधना में श्रीबाबामहाराज सूर, तुलसी व अधिकांशतया मीराजी के पदों का गायन करते हैं | मीराजी के निरंकुश, अति

निर्भय जीवन-चरित्र पर प्रकाश डालते हुए मानमंदिर की साध्वियों को सर्वदा उनके दिव्य कृष्णप्रेम से शिक्षा ग्रहण करने के लिए श्रीबाबामहाराज मीराजी के पदों को गाकर प्रोत्साहित करते रहते हैं | श्रीबाबामहाराज जी की ही प्रेरणा से साध्वी मुरलिका जी, साध्वी श्रीजी आदि देवियाँ तो देश ही नहीं, विदेश तक में श्रीमद्भागवत कथामृत के प्रचार-प्रसार द्वारा हजारों लोगों को भक्तिमय जीवन अपनाकर मानव-जीवन को सार्थक करने हेतु अतिशय महत्वपूर्ण जनकल्याणकारी कार्य में संलग्न हैं | इसी प्रकार मानमंदिर की अन्य साध्वियाँ भी महाराजश्री की आज्ञा से ब्रज और ब्रज के बाहर के हजारों गाँवों में प्रभातफेरी सम्मेलनों के आयोजन द्वारा समाज को विश्वमंगलकारी साधन 'नाम-संकीर्तन' से जोड़ रही हैं | मानगढ़ की ये क्रांतिकारी प्रचारिकाएँ समस्त प्रचार-कार्य निष्काम भाव से करती हैं, कहीं किसी से दान देने का अनुरोध नहीं करती हैं | इस प्रकार श्रीबाबामहाराज इन साध्वियों को आराधनामय और जनकल्याणकारी कार्यों में लगाकर वास्तविक और प्रभावशाली रूप से नारी जाति का सशक्तीकरण कर रहे हैं |

धाम-सेवा का सूत्रपात (ब्रज के पर्यावरण की सुरक्षा) : –

श्रीबाबामहाराज ने अखंड ब्रजवास करने के साथ ही साथ ब्रजभूमि की सेवा हेतु अनेकों महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं | सर्वप्रथम तो उन्होंने गह्वरवन की रक्षा हेतु ४६ वर्षों तक संघर्ष किया, इसके अतिरिक्त खनन-माफियाओं द्वारा ब्रज के पर्वतों का जो विनाश किया जा रहा था, उन विनाशक तत्वों के विरुद्ध महाराजश्री ने व्यापक आन्दोलन छेड़ दिया, जिसमें विजय-प्राप्ति का प्रमुख आधार संकीर्तन-आराधना थी; इसी आराधना के माध्यम से श्रीजी के आश्रय पर पूर्णरूपेण निर्भर रहते हुए उन्होंने ब्रज के पर्वतों को आसुरी शक्तियों के चंगुल से मुक्त कर उनकी सुरक्षा की | यह कार्य सहज नहीं था, इसके लिए उन्हें पचास वर्षों तक संघर्ष करना पड़ा | इसी प्रकार श्रीबाबामहाराज के द्वारा ब्रज के कुंडों के जीर्णोद्धार के सम्बन्ध में भी अभूतपूर्व कार्य किये गए | गह्वरवन के 'राधासरोवर' की स्वच्छता का कार्य तो श्रीबाबामहाराज ने स्वयं कई बार अपने हाथों से किया, इसके पश्चात् कोसी में 'गोमती गंगा' का जीर्णोद्धार करवाया, चिकसौली का दोहनी कुंड, बरसाने के प्रियाकुण्ड (पीली पोखर) और वृषभानु सरोवर, संकेत का विह्वल कुंड, हताना का कुण्ड, चौमुहा का चन्द्रसरोवर, जतीपुरा (गोवर्धन) में रुद्र कुंड और इसी प्रकार अनेकों ब्रज के कुंडों का जीर्णोद्धार इन ब्रजनिष्ठ महापुरुष के सत्प्रयासों से हुआ है | हाल ही के वर्षों में पूज्यश्री के द्वारा आदिबद्रीधाम में देवसरोवर के पुनर्निर्माण का कार्य तो अत्यंत चमत्कारिक घटना थी | धाम-सेवा के इन अद्वितीय कार्यों को करते समय महाराजश्री को अत्यधिक कठिनाइयों, प्रबल विरोधों का भी सामना करना पड़ा | एकबार तो 'राधारानी ब्रजयात्रा' के दौरान ही माँट में एक साधु ने गंगाजल में तीक्ष्ण विष मिलाकर **श्रीबाबामहाराज** को चरणामृत कहकर के दे दिया परन्तु मीरा की तरह विषपान करने पर भी इन विशुद्ध संत की कोई हानि नहीं हुई | इतना भयंकर अपराध करने पर भी इन करुणासिंधु ने उस पाखंडी साधु को क्षमा कर दिया | इसी प्रकार कई बार कुछ साधुओं ने एक गोष्ठी आयोजित कर श्रीबाबामहाराज को मानगढ़ व ब्रज से सदा के लिए निष्कासित करने का संकल्प लिया परन्तु वे अपने प्रयास में सफल नहीं हुये | धाम-सेवा के कार्यों को करते समय महाराजश्री के साथ

ही उनके कृपापात्र निज परिकरों को भी भीषण क्लेशों को सहना पड़ा, प्राणघातक हमले हुए, अपहरण तक किया गया, ऐसी अनेकों विपत्तियों को पूज्यश्रीबाबा ने सहज भाव से सहन ही नहीं किया अपितु अपने से द्वेष करने वाले अपकारियों से भी द्वेष न कर उन्हें क्षमा किया, उन पर करुणा की और सदा यही प्रयास किया कि उनका द्वेष मिट जाये | ब्रज-सेवा के अतिश्लाघनीय कार्यों में एक विशेष महत्वपूर्ण कार्य जो श्रीबाबामहाराज द्वारा किया गया, वह है - **श्रीराधारानी ब्रजयात्रा का शुभारम्भ** | यह यात्रा पूर्णतया निःशुल्क है और प्रतिवर्ष क्वार के महीने में त्रयोदशी तिथि से प्रारम्भ होती है, जिसमें देश-विदेश से १५ से २० हजार यात्रीगण ब्रज-परिक्रमा का लाभ उठाते हैं | श्रीबाबामहाराज द्वारा गह्वरवन के अतिरिक्त ब्रज के कई अन्य वनों का भी संरक्षण किया गया, इसके अतिरिक्त लुप्त हो चुकी प्राचीन लीला स्थलियों की खोज की गयी व उनको विनाश से बचाया गया |

राधामाधव के रसमय केलिश्रम से उत्पन्न कलिंदनन्दिनी श्रीयमुनाजी, जो गोलोक धाम से उनके नित्य विहार के लिए ही भूतल पर अवतरित होकर ब्रजभूमि में आयी थीं, अत्यन्त दुःख और दुर्भाग्य का विषय है कि वह आज ब्रज में नहीं हैं, यमुनाजी की धारा को ब्रज में लाने के लिए श्रीबाबा महाराज ने यमुना आन्दोलन का सूत्रपात किया है, उनका कहना है कि जब तक यमुनाजी की धारा ब्रज धरा का स्पर्श नहीं कर लेगी, तब तक यमुना आन्दोलन जारी रहेगा |

इसी प्रकार भारत व ब्रजभूमि में गौवंश की दयनीय दशा को देखकर पूज्यश्री के द्वारा सन् २००७ में बरसाने में माताजी गौशाला की स्थापना द्वारा ५० हजार गौवंश की मातृवत् सेवा व उनका संरक्षण किया जा रहा है |

मानमंदिर सेवा संस्थान के क्रियाकलाप:–

श्रीमानगढ़ या मानमंदिर बरसाने में ब्रह्माचल पर्वत पर स्थित चार शिखरों में से एक है, जहाँ पर मानिनी श्रीराधारानी ने मान किया था और श्यामसुंदर ने अत्यंत दीनतापूर्वक उन्हें मनाया था | श्रीराधामानबिहारीलाल की इस दिव्य प्रेममयी लीला की यह स्थली ब्रजनिष्ठ विरक्त शिरोमणि संत श्रीरमेशबाबा महाराज के विराजने से संकीर्तन आराधना, भगवत्कथा और ब्रजभूमि की सेवा की एक प्रमुख और सुदृढ़ आधारशिला बन गयी है | श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा और उनके मार्गदर्शन में यह संस्थान विविध जनकल्याणकारी और ब्रजसेवा- कार्यों में संलग्न है, जिन पर संक्षेप में प्रकाश डाला जा रहा है |

देश-विदेश में निष्काम भाव से श्रीमद्भागवत एवंब्रज संस्कृति काप्रचार :-

कलिकाल की ज्वाला से संतप्त मनुष्यों के कल्याण के लिए चारों वेदों के विभाजन, महाभारत और सत्तरह पुराणों की रचना के पश्चात् भगवदावतार महर्षि वेदव्यासजी द्वारा श्रीमद्भागवत की रचना की गयी परन्तु अत्यंत दुःखद और दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि वर्तमानकाल में श्रीमद्भागवत कथा को अर्थोपार्जन का एक प्रमुख साधन बना लिया गया है | श्रीमद्भागवत के ही गोपीगीत में ब्रजगोपिकाओं ने कथामृत का दान करने वाले को भूरिदा (सबसे बड़ा दाता) कहा है –

तवकथामृतंतप्तजीवनंकविभिरीडितंकल्मषापहम्।
श्रवणमङ्गलंश्रीमदाततंभुविगृणन्तितेभूरिदाजनाः॥

(भागवत १०/३१/९)

किन्तु यह अत्यधिक कटु सत्य भी है कि आधुनिक काल के कथावक्ता भूरिदा व कृष्णार्थी न होकर कथा के नाम पर अधिकाधिक स्वार्थी व धनार्थी बनते जा रहे हैं |

श्रीमद्भागवत कथा को व्यापार बनाए जाने की इस बढ़ती हुई प्रवृत्ति को देखकर पूज्य श्रीबाबामहाराज द्वारा ऐसे भागवत वक्ताओं की टीम का निर्माण हुआ जो देश-विदेश में निष्काम भाव से कथामृत का दान करके वास्तविक रूप से समाज का कल्याण कर रहे हैं | मानमंदिर के इन निष्काम भागवत प्रवक्ताओं में डॉ. रामजीलाल शास्त्री, साध्वी मुरलिका जी, साध्वी श्री जी, श्री महेश पण्डित जी और श्री राधिकेश जी आदि हैं, जिनमें डॉ. रामजीलाल शास्त्री, साध्वी मुरलिका जी, साध्वी श्रीजी और श्री राधिकेश जी तो भारत के अलावा प्रतिवर्ष विदेशों में भी निष्काम भाव से भागवत-कथा के प्रचार-प्रसार के अति सराहनीय कार्य में संलग्न हैं | डॉ. रामजीलाल शास्त्री, साध्वी मुरलिका जी और श्रीराधिकेश जी प्रतिवर्ष अमेरिका यात्रा करके वहाँ के विभिन्न राज्यों में अनिवासी भारतीयों के मध्य निष्काम भाव से भागवत कथामृत की सुप्रभावकारी रसमयी वर्षा कर उनका परम उपकार कर रहे हैं, साथ ही ब्रज के पर्यावरण की सुरक्षा में भी अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं | साध्वी मुरलिका जी द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन की राजधानी लन्दन में निष्काम भाव से जो भागवत कथा का प्रचार किया गया है, उसकी वहाँ के नागरिकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है और उनका मुरलिका जी के बारे में यही कहना है कि आज तक भारतवर्ष से अनेकों कथावाचक विदेशों में कथावाचन हेतु आये किन्तु साध्वी मुरलिका जी जैसी प्रभावशाली और निष्काम कथा व्यास हमने आज तक नहीं देखी | इसी प्रकार साध्वी मुरलिका जी की छोटी बहन साध्वी श्रीजी भी भारतवर्ष के अलावा प्रतिवर्ष फिजी में निष्काम भाव से भागवत कथामृत का वितरण करती हैं और उसका वहाँ के समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा है | वास्तव में ऐसे निष्काम कथामृत का दान करने वाले वक्ताओं को ही ब्रजदेवियों ने 'गोपीगीत' में भूरिदा कहा है |

श्रीभगवन्नाम-प्रचार :– पूज्य श्री महाराजजी का विश्वास है कि किसी की प्रेरणा से अथवा प्रयत्न से यदि कोई भी व्यक्ति भगवान् के प्रति आस्थावान हो जाये,उसके जीवन में आराधना आ जाये तो यह मानव-जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है | श्रीमद्भागवत में लिखा है – **सर्वेवेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ |**

जीवाभय प्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ||

(भागवत ३/७/४१)

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आज मान मंदिर सेवा संस्थान के माध्यम से नामनिष्ठ संत पूज्य श्रीबाबामहाराजजी की ही प्रेरणा से मानमंदिर सेवा संस्थान की दिव्य साध्वियाँ ब्रज और ब्रज के बाहर के गाँवों में निष्काम भाव से नाम-संकीर्तन का प्रचार कर रही हैं | इनके द्वारा अब तक ३५ हजार से अधिक गाँवों में नाम-संकीर्तन का प्रचार किया गया है | इनके द्वारा गाँव-गाँव में प्रभात फेरी सम्मलेन का आयोजन किया जाता है, जिसमें वे ग्रामवासियों को अपने गाँवों में नगर-कीर्तन के माध्यम से प्रभात फेरी चलाने का अनुरोध करती हैं | उनके निष्काम और ओजस्वी प्रवचन का यह परिणाम होता है कि अगले दिन से ग्रामवासी अधिकाधिक संख्या में प्रभात फेरी का शुभारम्भ कर देते हैं | मानमंदिर की ये क्रांतिकारी प्रचारिकाएँ प्रचार के नाम पर एक पैसा भी ग्रहण नहीं करती हैं, किसी से भी दान की याचना नहीं करती हैं, जिसका कि आजकल भारतवर्ष में पूर्णतया अभाव है | अनेकों धार्मिक संस्थाएँ हैं जो देश-विदेशों में प्रचार कर रही हैं किन्तु उनके द्वारा प्रचार के साथ-साथ लोगों से दान देने का अनुरोध किया जाता है जबकि मानमंदिर की इन निष्काम

प्रचारिकाओं में ऐसी प्रवृत्ति बिल्कुल भी देखने को नहीं मिलती |

पूज्य श्रीबाबामहाराज का विश्वास है कि भगवन्नाम-संकीर्तन से लौकिक-पारलौकिक सब प्रकार की कामनाओं की पूर्ति हो जाती है | इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है चौरासी कोस की ब्रजयात्रा और माताजी गौशाला | गौशाला में भी हर समय कीर्तन चलता रहता है | भगवन्नाम-प्रचार हो या श्रीमद्भागवतकथा,मान मन्दिर के सभी सदस्य नि:स्पृह भाव से सेवा करते हैं | भारत में या अन्य किसी देश में श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान से जो भी टीम जाती है, निष्काम भाव से सेवा करती है | कहीं भी पैसे की कोई ठहरावन या पूर्व माँग नहीं होती | कथा व्यास श्रीजी शर्मा, साध्वी श्री किशोरी देवी, संत श्री नृसिंहदास एवं संत श्री गिरधरजी इन चारों की एक टीम व दूसरी टीम में कथा व्यास मुरलिकाजी शर्मा, डॉ.श्री रामजीलालजी शास्त्री एवं श्री राधिकेशजी महाराज, इन तीन व्यासों की टीम देश-विदेशोंमें विशुद्ध भक्ति का प्रचार-प्रसारकर रही है;इनकी निष्कामता व सादगी का लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है | कितने ही लोगों ने अपना मन ब्रज आने को बना लिया है और अपनी टिकट भी बुक करवा ली है | पूज्य महाराजजी कहते हैं कि धर्म को व्यापार नहीं बनाना चाहिये, जिस धर्म-पालन में जितनी निष्कामता होगी, वह उतना ही सशक्त होगा |श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान के तत्वावधान में विदेश जाने वाली टीमों द्वारा लोगों पर विशेष रूप से ही आध्यात्मिक प्रभाव पड़ता है | यदि आप मानमंदिर के रचनात्मक कार्यों को देखना चाहें तो-w.w.w.maan mandir.org से देख सकते हैं | इस वेबसाइट से आप नित्य प्रात: ८ बजे से ९ बजे तक एवं सायं ६ से ७:३० बजे तक पूज्य महाराज जी के सत्संग का सीधा प्रसारण देख सकते हैं | यदि आपके पास स्मार्ट फ़ोन है तो maan mandir app .से नित्य का सत्संग download भी कर सकते हैं | इसी वेबसाइट में maan mandir.org के आगे murlika ji live.Type (टाइप) करने से U.K. एवं U.S.A. के उनके सारे भाषण आप you.tube से देख सकते हैं |

'साधना चैनल' पर बाबाश्री का सत्संग नित्य प्रातः ६.२० बजे से एवं मुरलिकाजी का ७.०० बजे से प्रसारित होता है |

धाम-सेवा :–

भगवान् हैं, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है यह दृश्यमान जगत |

"विश्वोत्पत्त्यादिहेतवे"

(भागवतमाहात्म्य, पद्मपुराण १/१)

समग्र विश्व की उत्पत्ति,पालन-पोषण व संहार उसी की इच्छा से होता है, कोई मनुष्य नहीं कर सकता | सम्पूर्ण विश्व को यदि विराट भगवान् का शरीर माना जाये तो भारत उसका हृदय है और 'ब्रज' है उसका प्राण | प्राण के अभाव में शरीर का कोई अस्तित्त्व नहीं रहता | ब्रज एवं ब्रज-संस्कृति की रक्षा से ही सारे विश्व में सुख-शांति, समृद्धि, एकता एवं पारस्परिक प्रेम की प्राप्ति संभव हो सकेगी | **ब्रज-संस्कृति क्या है ?** एक शब्द में यदि इसका उत्तर पूछा जाये तो वह है - **निष्काम प्रेम|** जिसके आधीन होकर सर्वशक्तिमान ब्रह्म श्रीकृष्ण ब्रजगोपियों का ऋणियां बन जाता है | जिसकी भौंह के इशारे पर सारा जगत नाचता है | ब्रजगोपियों के आगे वह सर्वेश्वर कठपुतली की तरह नाचता है | जो काल का भी काल है, बड़े-बड़े असुरों का संहार करने वाला है, वह ग्वालबालों से खेल में पिट जाता है, हार जाता है | इस **दिव्य निष्कामप्रेम** की प्राप्ति **कैसेसम्भव है ?**इसकी प्राप्ति का एक ही उपाय है, वह है - **भाव से ब्रज की सेवा|** पाँच हजार वर्ष पूर्व द्वापरकाल में ब्रज से अपनी लीला संवरण करके भगवान् श्रीकृष्ण अपने अन्तरंग लीला परिकरों सहित गोलोक धाम को गमन कर गए |

उनके यहाँ से जाने के पश्चात् नन्दबाबा के पुरोहित शांडिल्य जी ने श्रीकृष्ण प्रपौत्र वज्रनाभ जी को धाम-सेवा करने की सम्मति दी थी -

नद्यद्रिद्रोणिकुण्डादिकुञ्जान्संसेवतस्तव।

राज्येप्रजाःसुसम्पन्नास्त्वंचप्रीतोभविष्यसि॥

(स्कन्दपुराण,भा.माहा. 1/39)

'ब्रज में तुम्हें भगवान् की लीला-स्थलियों यथा - नदी, पर्वत, घाटी, सरोवर (कुंड) तथा कुंज-वन आदि की सेवा करना चाहिए | ऐसा करने से तुम्हारे राज्य की प्रजा अत्यधिक संपन्न रहेगी तथा तुम भी अतीव प्रसन्न रहोगे |' महर्षि शांडिल्य जी की आज्ञा से ब्रजभूमि की लीलास्थली की सेवा द्वारा वज्रनाभ जी को साक्षात् नन्दनंदन की प्राप्ति हो गई | इसलिए धाम-सेवा का अत्यधिक महत्व है, यही कारण है कि मानमंदिर सेवा संस्थान द्वारा ब्रज की लीला-स्थलियों की रक्षा, उनकी सेवा हेतु अनेकों प्रयत्न किये गए हैं |

ब्रज के दिव्य पर्वतों की रक्षा:–

ब्रज के पर्वत साधारण नहीं हैं क्योंकि बड़े-बड़े देवता ही तपस्या करके भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं के दर्शन हेतु वरदान प्राप्त करके इस पावन धरा पर पर्वतों के रूप में अवतरित हैं | जैसे - बरसाने में ब्रह्माचल पर्वत के रूप में साक्षात् ब्रह्माजी पर्वत के रूप में स्थित हैं, नंदगाँव में भगवान् शंकर नन्दीश्वर पर्वत के रूप में तथा गिरिराज जी के रूप में भगवान् विष्णु ही पर्वताकार रूप धारण किये हैं | इनके अतिरिक्त अष्टकूट, आदिबद्री, कनकाचल, सखीगिरि, रंकुपर्वत आदि अनेक पर्वतों के रूप में देवगण ही ब्रजभूमि में आज भी गुप्त रूप से हो रही श्रीकृष्णलीला का साक्षात् दर्शन करते हैं | इन्हीं दिव्य पर्वतों पर श्रीश्यामसुंदर ने गौचारण-लीला करते हुए गोपसखाओं के साथ रसमयी क्रीडायें कीं | वंशीवादन के समय इन पर्वतों के पाषाण द्रवित होकर पिघल जाते थे और उन पर नन्दनंदन के सुरमुनिवन्दित चरणकमलों के चिन्ह अंकित हो जाते थे | ऐसे दिव्य पर्वतों पर पचास वर्ष पूर्व कलियुग की कुचाल के फलस्वरूप खनन माफियाओं की ऐसी कुदृष्टि हुई कि इन्हें अत्याधुनिक मशीनों तथा डायनामाइट आदि विस्फोटक पदार्थों से नष्ट किया जाने लगा | धनलोलुप माफियाओं को वित्तैषणा ने इतना नीचे गिरा दिया कि वे कृष्णलीला के प्रत्यक्ष प्रमाण स्वरुप व साक्षी ब्रज के इन पर्वतों के धार्मिक व ऐतिहासिक महत्व को न समझकर, इन्हें ही अपनी आर्थिक समृद्धि का साधन समझकर सरकारी तंत्र को रिश्वत देकर उसकी मिलीभगत (सहमति) से मदांध होकर व्यापक रूप से ब्रज के पर्वतों का विनाश करने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ जुट गए | फिर क्या था, ब्रज की रक्षा हेतु अवतरित ब्रजनिष्ठ महाविभूति श्रीबाबामहाराज के नेतृत्व में मानमंदिर सेवा संस्थान ने भी ऐसी आसुरी शक्तियों के चंगुल से ब्रज के दिव्य पर्वतों की रक्षा करने के लिए अपनी कमर कस ली | धन और सरकारी आश्रय से मदांध हुए शक्तिशाली खनन माफियाओं के विरुद्ध धनहीन परन्तु ईश्वरीय आश्रय से सबल हुए मानमंदिर ने संकीर्तनमय आराधना के माध्यम से सशक्त आन्दोलन छेड़ दिया | मानमंदिर के विरक्त संतों और ब्रजवासियों ने ब्रज के पर्वतों की रक्षा हेतु अपने प्राणों तक को जोखिम में डाल दिया | कई बार अन्न-जल का त्याग कर आमरण अनशन किया गया | मानमंदिर के सदस्यों पर प्राणघातक हमले हुए, अपहरण किया गया, आसुरी पर्वत-विनाशकों ने श्रीबाबामहाराज की जीवन-लीला समाप्त करने तक के कुत्सित प्रयास किये परन्तु इतिहास साक्षी है कि जब कभी भी दैवी और आसुरी शक्ति के मध्य संघर्ष छिड़ा तो अनेकों विपत्तियों का सामना करने पर भी विजय अंत में दैवी शक्ति की ही हुई है | इसी प्रकार श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान के द्वारा ब्रजस्वामिनी

श्रीराधारानी का आश्रय लेकर ब्रज के पर्वतों की रक्षा का जो दीर्घकालीन अभियान छेड़ा गया, उसमें अनेकानेक दारुण कठिनाइयों और क्लेशों को सहने के बावजूद भी विजय मानमंदिर की हुई और धन कुबेर बने हुए खनन-माफिया, जिनको राजस्थान सरकार पर्वतों की विनाश-लीला में पूर्ण सहयोग कर रही थी, उन्हें अंत में पराजय का मुख देखना पड़ा | मानमंदिर संस्थान द्वारा ब्रज के पर्वतों की रक्षा का आन्दोलन काफी लम्बे समय तक जारी रहा, कुछ लोगों ने यहाँ तक कहना शुरू कर दिया था कि सरकारी सहायता से कार्य कर रहे अरबपति खनन-माफियाओं पर विजय प्राप्त करना असंभव है, मानगढ़ को असफलता का ही मुख देखना पड़ेगा | बहुत से अध्यात्म-जगत के महानुभावजन तो इस कार्य को भौतिक प्रपंच बताया करते थे और उनका कहना था कि यह कार्य साधु-संतों को शोभा नहीं देता है और इसीलिए उन्होंने ब्रज के पर्वतों की रक्षा के कार्य में कोई सहयोग न कर इससे दूरी ही बनाई रखी | परन्तु इस प्रकार के संकीर्ण मतों, आलोचनाओं और असहयोग के बावजूद भी पर्वतों की रक्षा हेतु मानगढ़ द्वारा चलाया गया आन्दोलन और संघर्ष चलता रहा और अंत में सन् २००९ की राधारानी ब्रजयात्रा के दौरान कामाँ (काम्यवन) में पूज्य श्रीबाबामहाराज द्वारा स्वयं आमरण अनशन पर बैठने से तत्कालीन राजस्थान सरकार दहल गयी और १२ घंटे के भीतर ही उन्होंने ब्रज के पर्वतों की रक्षा हेतु मानमंदिर द्वारा किये गए संघर्ष की महत्ता को स्वीकार कर ५२३२ हेक्टेयर भू-भाग को आरक्षित वन क्षेत्र घोषित कराकर पर्वतों की रक्षा का महत्वपूर्ण कार्य संपन्न किया |

ब्रज के कुण्डों का संरक्षण:–

ब्रज के अगणित सरोवर श्रीराधामाधव की दिव्य लीलाओं से जुड़े हैं, जिनमें वे स्नान करते, उनके स्वच्छ जल का पान करते हैं | सम्पूर्ण ब्रज में कितने कुण्ड थे, यह तो अज्ञात है परन्तु अकेले काम्यवन (कामाँ) में ही ८४ कुंड थे, नंदग्राम में ५६ कुंड थे | कलियुग में काल की करालता वश धीरे-धीरे कृष्णलीला के साक्षी इन दिव्य सरोवरों में कई तो लुप्त हो गए और कितने ही दुर्दशा का शिकार हो गए, कितने ही कुंडों पर अवैध रूप से लोगों ने कब्ज़ा कर लिया | मानमंदिर सेवा संस्थान द्वारा ब्रज के कुंडों के जीर्णोद्धार के सम्बन्ध में भी अत्यंत सराहनीय कार्य किये गए हैं | सर्वप्रथम तो कोसी में गोमती गंगा का जीर्णोद्धार कराया गया जो कि एक गंदे नाले के रूप में परिणत हो गयी थी और जिस पर आक्रामक रूप से ब्रज-विनाशक तत्वों का कब्ज़ा हो गया था | पूज्य श्रीबाबा के मार्गदर्शन में सर्वप्रथम मानमंदिर के संतों द्वारा वहाँ कई महीने निवास कर अखंड कीर्तन किया गया और शनैः-शनैः भगवन्नाम के प्रभाव से समस्त बाधाएँ दूर होती गयीं, कोसी में अभूतपूर्व जन-जाग्रति हुई और इस तरह गोमती गंगा का जीर्णोद्धार हो गया | ब्रज में 'मानमंदिर' द्वारा अब तक निम्नलिखित कुंडों (सरोवरों) का जीर्णोद्धार किया गया है – १.रत्न कुण्ड (डभारा) २. गोमती गंगा (कोसी) ३. दोहनी कुण्ड (चिकसौली) ४. कृष्ण कुंड (नन्दगाँव)५. विह्वल कुंड (संकेत) ६.धमारी ग्राम का कुण्ड ७. मेंहदला कुंड (हताना) ८.ललिता कुण्ड (कमई) ९.बिछुआ कुंड (बिछोर) १०. लोहरवारी गाँव का कुंड ११. गया कुण्ड (कामवन) १२. सूर्यकुंड (कामवन) १३. नयन सरोवर (सेऊ) १४. लाल कुण्ड (दुदावली) १५. बिछुआ कुंड (जतीपुरा) १६. रूद्र कुंड (जतीपुरा) १७. गोपाल कुण्ड (डीग) १८. चन्द्र सरोवर (चौमुँहा) १९. प्रियाकुण्ड (पीली पोखर) बरसाना २०. देवसरोवर (आदिबद्री) |

आदिबद्री धाम में स्थित देवसरोवर तो श्रीकृष्णलीलाकाल के बाद से लुप्त हो गया था | आचार्यों द्वारा प्रणीत किसी ग्रन्थ में भी इसका उल्लेख नहीं था |

केवल महर्षि गर्गाचार्य रचित गर्गसंहिता में ही इसका उल्लेख किया गया है | उसी ग्रन्थ के आधार पर इसकी महत्ता को पहचानकर पूज्य श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से देवसरोवर का पुनर्निर्माण कार्य हुआ |

यह सरोवर ५५०० वर्षों तक लुप्त रहा | यंत्रवेत्ताओं (इंजीनियरों) के अनुसार देवसरोवर के पुनर्निर्माण पर लगभग ८५ लाख से १ करोड़ रुपयों तक के व्यय की संभावना थी परन्तु मानमंदिर में धन-बल और जन-बल के पूर्ण अभाव होने पर भी एकमात्र श्रीराधारानी के चरणों का आश्रय लेकर देवदुर्लभ देवसरोवर के पुनर्निर्माण का कार्य श्रद्धा और विश्वास से प्रारम्भ कर दिया गया | भीषण ग्रीष्म ऋतु में, जून के महीने में मानमंदिर गुरुकुल के छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं व यहाँ की दिव्य साध्वियों और साधु-संतों के कठोर परिश्रम से देवसरोवर का निर्माण हो गया | इस सरोवर का पुनर्निर्माण एक अत्यधिक चमत्कारिक और ऐतिहासिक घटना थी | श्रीलक्ष्मीनारायण द्वारा राधामाधव के विहार के लिए निर्मित सरोवर के लुप्त होने पर श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से श्रीमानमंदिर की आराधिकाओं की अलौकिक शक्ति के द्वारा फिर से इस सरोवर का प्राकट्य हो गया | इसी प्रकार बरसाने में प्रियाकुंड (पीलीपोखर) का जीर्णोद्धार भी अत्यधिक असंभव-सा कार्य था क्योंकि हजारों वर्षों से इसकी सफाई न होने के कारण इस कुंड में सैकड़ों टन कीचड़ जमा हो गयी थी | श्रीराधारानी मंदिर के गोस्वामियों के अनुरोध पर श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से मानमंदिर के परम श्रद्धावान संतों और आराधिकाओं की सैन्य-शक्ति एक बार फिर से राधारानी के इस कुंड की सफाई में जुट गयी और ३-४ महीने के अथक परिश्रम के बाद असंभव-सा लगने वाला कार्य संभव हो गया और राधारानी के इस सरोवर को उनके लीलाकाल के बाद पहली बार स्वच्छ किया गया |

गौवंश की रक्षा हेतु माताजी गौशाला की स्थापना :–

पृथ्वी को धारण करने वाले सात आधार स्तंभों में प्रथम स्तम्भ है –गाय |

जैसा कि स्कंदपुराण में भी कहा गया है -

गोभिर्विप्रैश्चवेदैश्चसतीभिःसत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्चसप्तभिर्धार्यतेमही॥

(स्कंदपुराण४.२.१०)

गोविन्द को गायों से जितना प्रेम था, उतना किसी से नहीं | गायों की रक्षा के लिए ही उन्होंने ब्रजवासियों से इन्द्र पूजन बंद कराकर गिरिराज-पूजन कराया | ब्रजलीला के दौरान गोपाल ने नंगे पैर गौचारण किया और गौमाता की अत्यधिक प्रेम से सेवा की किन्तु आज उसी गोपाल के ब्रज में गायों की दुर्दशा हो रही है | घर-घर लोग गाय के स्थान पर भैंस को रख रहे हैं | गायों को कसाइयों को बेचा जा रहा है | भारतवर्ष दुनिया का सबसे बड़ा गौ-माँस निर्यातक देश बन गया है | विश्ववन्द्या गौमाता की दयनीय स्थिति को देखकर श्रीमानमंदिर के महाराजश्री ने गौ-रक्षा का विशेष अभियान प्रारम्भ कर सन् २००७ में गौवंश के पालन और उसकी सुरक्षा की दृष्टि से बरसाने में माताजी गौशाला की स्थापना की | मात्र ४-५ गायों से आरम्भ होकर आज इस गौशाला में लगभग पचास हजार गायों का मातृवत् पालन-पोषण और संरक्षण किया जा रहा है | इस गौशाला में ब्रज और ब्रज के बाहर के सुदूरवर्ती स्थलों से भी कसाइयों के चंगुल से मुक्त कराकर विशाल वाहनों में गौवंश को लाया जाता है और उनकी सेवा की जाती है | ऐसी गायें जो दूध देना बंद कर देती हैं, वृद्ध

और अनाथ होकर दर-दर भटका करती हैं तथा बीमार व विकलांग गायों को भी यहाँ आश्रय प्रदान कर भाव से उनकी सेवा की जाती है | गायों के अतिरिक्त इस गौशाला में बछड़े–सांड़ (बैल) आदि को भी रखा जाता है | एकमात्र यही ऐसी गौशाला है जहाँ गौवंश को रखने से मना नहीं किया जाता | वर्तमानकाल में यह उत्तर-प्रदेश की सबसे बड़ी गौशाला बन गयी है | गौ-सेवा हेतु प्रतिदिन यहाँ विशाल संख्या में ट्रकों और ट्रैक्टरों द्वारा प्रचुर मात्रा में भूसा और हरा चारा मँगाया जाता है | गायों की सानी के लिए भी यहाँ विदेशों से लायी गयी अत्याधुनिक मशीनों का प्रयोग किया जाता है | बीमार और विकलांग गायों की चिकित्सा हेतु अलग से विशेष व्यवस्था की गयी है, इसके लिए गौ-चिकित्सक भी यहाँ कार्यरत हैं जो गौवंश का भलीभाँति उपचार करते हैं | विशाल गौवंश होने से यहाँ एक विशाल गोबर गैस संयंत्र की स्थापना भी की गयी है | जिसके द्वारा जेनरेटरों के माध्यम से बिजली का उत्पादन किया जाता है | इस गोबर गैस प्लांट में प्रचुर मात्रा में जैविक खाद का भी उत्पादन किया जाता है जो किसानों को सस्ते दाम में उपलब्ध कराई जाती है | माताजी गौशाला में स्थापित इस गोबर गैस संयंत्र द्वारा जैविक खाद के उत्पादन से किसानों को कृषि कार्य में बहुत लाभ हो रहा है | पुरातनकाल में भारतवर्ष में गाय के गोबर से बनी खाद का ही कृषि-कार्य में उपयोग किया जाता था, जिससे भूमि भरपूर मात्रा में स्वास्थ्य के लिए उपयोगी अन्न उत्पन्न करती थी और इसी कारण भारत आर्थिक रूप से विश्व का सबसे समृद्धिशाली देश था परन्तु ब्रिटिश शासन में अंग्रेजों के द्वारा भारतीय कृषि को क्षति पहुँचाकर देश को गरीब बनाने के लिए गौ-हत्या केन्द्रों की विशाल मात्रा में स्थापना की गयी तथा अंग्रेजों ने गोबर की खाद से समृद्धिशाली बनी भारतीय कृषि को नष्ट करने के लिए इंग्लैण्ड में बनी रासायनिक खाद का भारतीय भूमि में प्रयोग करवाया जिससे फसल की गुणवत्ता को अत्यधिक हानि पहुँची, भारतीय कृषि निम्न स्तर पर पहुँच गयी | आज रासायनिक खाद के प्रयोग से भूमि दिन पर दिन बंजर होती जा रही है, दोषयुक्त अन्न होने से अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति हो रही है | माता जी गौशाला में गौमूत्र एवं गोबर से बनी जैविक खाद का ब्रजवासीजन अपने कृषि कार्य में उपयोग कर रहे हैं, जिससे उनकी फसल का उत्पादन बढ़ गया है, साथ ही हानिकारक रसायनों का प्रयोग न करने से फसल की गुणवत्ता बढ़ी है और रसायनों में होने वाला आर्थिक व्यय रुक गया है, जिससे ब्रजवासी काफी प्रसन्न हैं | गाय के गोबर की खाद की माँग दिन पर दिन बढ़ती जा रही है | गोबर गैस से माताजी गौशाला में जेनरेटर चलाये जा रहे हैं, बिजली बनाई जा रही है, जिसका गौशाला में ही उपयोग हो रहा है | गौमूत्र से निर्मित बहुत से आयुर्वेदिक उत्पाद तैयार किये जा रहे हैं |इसके अतिरिक्त इस गौशाला में अन्य कई शोध-कार्य भी चल रहे हैं | आशा है कि भविष्य में माताजी गौशाला पूर्णरूपेण आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ देश में एक आदर्श गौशाला का कीर्तिमान स्थापित करेगी | सौभाग्य से श्रीमाताजी गौशाला उसी स्थान पर स्थित है जहाँ वृषभानुजी (श्रीराधारानी के पिता) की गायें निवास करती थीं |

उत्तर प्रदेश के यशस्वी, गौभक्त मुख्यमंत्री माननीय श्री आदित्यनाथ योगी जी भी हाल ही में बरसाने की रंगीली होली के उपलक्ष्य में माता जी गौशाला का दर्शन करने आये थे | इस गौशाला में गौवंश की अपार संख्या और विलक्षण विधि से मातृवत् की जा रही गौ-सेवा से वह

अत्यधिक प्रसन्न हुए और मुक्तकंठ से उन्होंने इस गौशाला की सराहना की थी, उनके सहयोग से गौशाला के निकट ही स्थित रत्नगिरि पर्वत भी माताजी गौशाला को उपलब्ध हो गया है, जिससे भविष्य में एक लाख तक गौवंश के समुचित निवास हेतु इस पर्वत का सदुपयोग होगा |

मानमंदिर कला अकादमी की स्थापना:–

जीव-कल्याण हेतु पृथ्वी पर अवतरित महापुरुष प्रतिक्षण मनसा, वाचा, कर्मणा मनुष्य को भगवान् के प्रति आकर्षित करने के प्रयासों में सदा व्यस्त रहते हैं | यही कारण था कि एकबार सम्पूर्ण रात्रि श्रीबाबामहाराज को नींद नहीं आई, राधाष्टमी का पर्व निकट था, निद्रा न आने पर देर रात तक महाराजश्री यही विचार करते रहे कि राधाष्टमी और रंगीली होली के पर्व पर देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु भक्त बरसाना आते हैं, उनका बरसाना आना सफल हो, वे राधाष्टमी और रंगीली होली की महिमा को समझें, इस उद्देश्य से श्रीबाबा के मन में संकल्प जाग्रत हुआ कि अबकी बार राधाष्टमी के पर्व पर एक दिव्य नाटिका का मंचन किया जाय, जिसमें श्रीराधारानी के जन्म-महोत्सव का विस्तार से अभिनय के माध्यम से प्रस्तुतीकरण हो ताकि बरसाना आने वाले भक्तगण 'राधाष्टमी महोत्सव' की महिमा से भलीभाँति अवगत हों | फिर क्या था, पूज्यश्री के संकल्प को पूर्ण होने में देर नहीं लगी और अगले दिन प्रातःकालीन सत्संग में उन्होंने अपने विचार से सभी को अवगत करा दिया कि इस बार की राधाष्टमी पर श्रीराधाजन्मलीला से जुड़ी विस्तृत नाटिका का मंचन किया जाएगा | श्रीबाबा के मनोरथ को पूर्ण करने के लिए स्वतः ही श्रीजी की कृपा से, मुंबई से श्री दिलीप मेहरा जी आये, जिन्होंने रामानन्द सागर निर्देशित प्रसिद्ध दूरदर्शन धारावाहिक 'रामायण' में अभिनय किया था | श्रीबाबा ने उन्हें राधाष्टमी लीला की विस्तृत कथा बताई और नाटिका के मंचन के लिए बाहरी कलाकारों को नहीं अपितु मानमंदिर की ही दिव्य साध्वियों, संतों और दीदी जी गुरुकुल के बच्चों को अभिनय हेतु प्रशिक्षित करने के लिए कहा | इस प्रकार पूज्यश्री के द्वारा राधाष्टमी और रंगीली होली के पर्व पर राधाकृष्ण की लीला और भक्तमाल में वर्णित भक्त-चरित्रों से संबंधित एक नाटिका के मंचन हेतु 'मानमंदिर कला अकादमी' की स्थापना हुई | श्री दिलीप जी ने राधाष्टमी की लीला-नाटिका के प्रस्तुतीकरण के लिए मानमंदिर के साध्वियों, संतों और बच्चों को प्रशिक्षण दिया, निर्देशित किया | मानमंदिर के इन भक्तों ने पहले किसी नाटिका में अभिनय नहीं किया था परन्तु आश्चर्य की बात है कि एक बार के प्रशिक्षण से ही सभी ने इतना कुशल अभिनय किया कि स्वयं दिलीप जी भी आश्चर्यचकित हो गए, उन्हें ऐसी आशा नहीं थी कि मानमंदिर के ये भक्त पहली बार के ही निर्देशन में इतना सफल अभिनय कर लेंगे | अनन्तर राधाष्टमी के दिन लाखों भक्तों के समक्ष मानमंदिर के विशाल भवन रसमंडप में 'राधाष्टमी नाटिका' का प्रदर्शन किया गया तो सभी ने इस नाटिका की भरपूर सराहना की | इसके पश्चात् रंगीली होली के उत्सव पर श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से मानमंदिर कला अकादमी द्वारा रंगीली होली से संबंधित बरसाना-नंदगांव की होली का प्रस्तुतीकरण किया गया | इसके बाद के राधाष्टमी, रंगीली होली पर्वों पर श्रीबाबामहाराज ने नाटिका के लिए गोस्वामी नाभा जी कृत दिव्य ग्रन्थ भक्तमाल से भक्त-चरित्रों का मंचन करने की श्री दिलीप जी को प्रेरणा दी | परिणामस्वरुप दक्षिण भारत के प्रसिद्ध कृष्णभक्त 'बिल्वमंगल जी' के जीवन पर आधारित नाटिका का मंचन किया गया,

इसके बाद तो एक के बाद एक भक्त-चरित्रों पर आधारित नाटिकाएँ सहजतापूर्वक सम्पन्न होने लगीं | भक्त चंद्रहास, अम्बरीष जी की जीवनी को नाटिका के द्वारा दर्शाया गया | श्रीबाबा महाराज की सर्वाधिक प्रिय नाटिका **'गोपिकावातार श्रीमीराबाई की जीवनी'** को इस कला अकादमी के द्वारा तीन भागों में प्रस्तुत किया गया | संत कबीर जी की नाटिका को दो भागों में दर्शाया गया, इसी प्रकार अन्य नाटकों में संत जयदेव जी, भक्त नरसी जी के चरित्रों को प्रदर्शित किया गया, इसी प्रकार श्रीमीराजी के गुरुदेव संत रैदास जी के चरित्र को भी इस कला अकादमी द्वारा दो भागों में प्रस्तुत किया गया है |

मानमंदिर के जितने भी 'भक्तजन' नाटिका में अभिनय करते हैं, वे केवल सात दिन में ही सम्पूर्ण नाटिका की तैयारी कर लेते हैं | यहाँ की साध्वियाँ और संतजन सात दिन से भी कम समय में नाटक के लिए अथक परिश्रम करते हैं, सारी रात जागते हैं | उनके इस कठोर श्रम से केवल सात दिन में ही नाटक तैयार हो जाता है | ऐसा दुनिया के 'अभिनय जगत' में कहीं नहीं होता है | श्रीदिलीप जी नाटिका हेतु निष्काम सेवा करते हैं, कोई वेतन नहीं लेते हैं, इनके अंतःकरण में विचित्र त्याग है | ये नाटिका के लिए पूर्ण तत्परता से निष्काम सेवा इसलिए करते हैं क्योंकि मानमंदिर के संत और साध्वियाँ अपने पास धन नहीं रखते हैं, नाटिका में अभिनय के लिए वेतन नहीं लेते | 'मानमंदिर कला अकादमी' के समस्त कलाकार बड़े त्यागी व अत्यंत सदाचारी हैं |

ब्रज-प्रेम प्रदायिनी 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा'

ब्रजयात्रा से लौकिक लाभ और पारमार्थिक लाभ, दोनों प्रकार के लाभ होते हैं | ब्रज-परिक्रमा करने से लौकिक लाभ तो यह होता है कि हम जड़ योनियों की प्राप्ति से दूर रहते हैं, हमारे पाप नष्ट होते हैं | ऐसे-ऐसे जघन्य पाप ब्रज-परिक्रमा से नष्ट होते हैं, जिनकी हमलोग कल्पना भी नहीं कर सकते और पारमार्थिक लाभ यह है कि ब्रजयात्रा के माध्यम से हम लोगों को संत और ब्रजवासियों का सानिध्य मिलता है, धामवास मिलता है, सतत् हरिनाम संकीर्तन श्रवण करने को मिलता है | ब्रजयात्रा करने से सबसे बड़ा लाभ यही है कि हमारा चित्त, हमारा अंतःकरण बिना प्रयास के स्वतः ही भगवान् में लगा रहता है, हम न चाहें, हम प्रयास न करें तो भी ब्रजयात्रा के द्वारा हमारा चित्त भगवान् में लगा रहेगा | ऐसा संयोग श्रीमानमंदिर से संचालित श्रीराधारानी ब्रजयात्रा में ही बनता है | इस यात्रा में चौबीस घंटे अखंड कीर्तन चलता रहता है, इसलिए न चाहने पर भी कान में सतत् हरिनाम प्रवेश करता रहता है | इस तरह से अपने आप ही भगवद्-शरणागति सुगमतापूर्वक हो जाती है |

श्रीमानमंदिर द्वारा संचालित श्रीराधारानी ब्रजयात्रा पूर्णतया निःशुल्क है | ब्रज में ब्रजयात्राओं का व्यापारीकरण होने लग गया, शुल्क देकर पदयात्रा नहीं अपितु वाहनों द्वारा यात्रा कराई जाती है और शुल्क भी इतना अधिक लिया जाता है कि गरीब भक्त ब्रजयात्रा नहीं कर सकते | ब्रज-परिक्रमाओं में धन का इतना वर्चस्व देखकर पूज्य श्रीबाबामहाराज को बहुत दुःख हुआ कि गरीब व्यक्ति तो धन के अभाव में ब्रजयात्रा, ब्रज का दर्शन ही नहीं कर सकते | इस समस्या को देखकर उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब मानमंदिर द्वारा एक ऐसी यात्रा का शुभारम्भ होगा जो पूर्णतया निःशुल्क होगी, जिसमें गरीब श्रद्धालु बिना किसी रोक-टोक के सुगमतापूर्वक ब्रज-परिक्रमा कर ब्रजभूमि का दर्शन कर

सकेंगे | सन् १९८८ से श्रीबाबामहाराज के नेतृत्व में मानमंदिर द्वारा ब्रजयात्रा का शुभारम्भ हो गया | इस यात्रा का नामकरण किया गया –**'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा'**| प्रथम बार की यात्रा में लगभग २०० यात्रियों ने ब्रज की परिक्रमा की | उस समय मानमंदिर पर धन का पूर्णतया अभाव होने से यात्रा के लिए न तो तम्बू-तनात की व्यवस्था थी, न भोजन का प्रबंध था, केवल ११ मन सत्तू पिसाकर सत्तू का ही आहार यात्रियों को उपलब्ध कराकर यात्रा की गयी | बिजली, पानी आदि की कोई सुविधा नहीं थी परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यात्रा में जो थी वह यह कि इस यात्रा में श्री बाबा महाराज द्वारा चौबीस घंटे अखंड कीर्तन की व्यवस्था की गयी थी और अहर्निश मधुर स्वर में संगीत की धुनों के साथ युगलमंत्र का संकीर्तन श्रद्धालु भक्तों द्वारा किया जाता था | यह अखंड हरिनाम-संकीर्तन ही इस यात्रा का प्राण है | २०० यात्रियों से प्रारंभ हुई इस यात्रा में वर्तमानकाल में १५ से २० हजार यात्री देश-विदेश से सम्मिलित होते हैं | समस्त असुविधाओं से प्रारम्भ हुई यह ब्रजयात्रा अब सर्वसुविधा संपन्न और परम रसमयी बन गयी है | यात्रियों को दोनों समय निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जाता है, बीमार पड़ने पर यात्रियों की चिकित्सा हेतु डॉक्टरों का प्रबंध किया जाता है जो निःशुल्क रूप से रोगियों को औषधि का वितरण करते हैं, उनका उपचार करते हैं | प्रातःकाल ५ से ६ बजे के मध्य ब्रजयात्रा अपने पड़ाव-स्थल से अगले पड़ाव को चल देती है | यात्रियों को अपना सामान स्वयं नहीं वहन करना पड़ता है, इसके लिए विशाल वाहनों की व्यवस्था की जाती है | यात्रीगण सुबह परिक्रमा में चलते समय अपना सामान पड़ाव-स्थल पर ही छोड़ जाते हैं, फिर विशाल वाहन उनके सामान को अगले पड़ाव पर पहुँचा देते हैं | यह व्यवस्था भी पूर्णतया निःशुल्क है | राधारानी ब्रजयात्रा का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण होता है - चालीस दिवसीय चौबीस घंटे का अखंड भगवन्नाम-संकीर्तन (जिसमें श्रीबाबा महाराज द्वारा संरचित युगल मंत्र की विभिन्न प्रकार की रसमयी धुनें व रसिया-पदों आदि का संगीतमय गायन होता है), इसके कारण यात्रा का प्रत्येक क्षण, रस और प्रेम की अनुभूति कराता रहता है | सतत् ब्रजभावभावित युगलरसमय संकीर्तन का दिव्य प्रेमानन्द द्वापरयुग के कृष्णलीलाकालीन ब्रज की स्मृति दिलाता है | इस यात्रा के दौरान ही श्रीबाबामहाराज की शास्त्रीय संगीत पर आधारित युगल महामंत्र की धुनों का रसमय गायन होता है | ब्रजयात्रा में ही श्रीबाबा ने युगल महामंत्र की अनेकों नवीन धुनों की संरचना की | प्रातःकाल जब यात्रा अपने गंतव्य को रवाना होती है तो उसकी भी एक समुचित व्यवस्था होती है | यात्रा की विशाल पंक्ति में सबसे आगे एक संत श्रीजी की झंडी लेकर चलते हैं, उनके पीछे साधु-संत चलते हैं, साधु-संतों के पीछे मानमंदिर गुरुकुल के बालक, बालिकाएँ चलते हैं और उनके पीछे श्रीराधामानबिहारीलाल को एक डोले में विराजित कर संत श्रीमूलचंदजी चलते हैं, उनके पीछे मानमंदिर की आराधिकाओं की कीर्तन मण्डली होती है, जो परिक्रमा के सम्पूर्ण मार्ग पर सुमधुर स्वर में संकीर्तन करते हुए चलती है, संकीर्तन मण्डली के पश्चात् १५ से २० हजार यात्रियों की विशाल पंक्ति होती है जो पूर्ण अनुशासित रूप से संकीर्तन करते हुए चलती है | श्रीमानबिहारीलाल के डोले के आगे मानमंदिर की दिव्य आराधिकाएँ सारे रास्ते पर नृत्य करती हुई चलती हैं; इस रसमय गान और नृत्य से यात्रा का वातावरण सर्वाधिक सरस हो जाता है | यात्रा की अग्रिम पंक्ति में माइकों द्वारा जो रसमय संकीर्तन होता है, वह दूर तक सभी यात्रियों को सुनाई पड़े, इसके लिए वायरलेस ध्वनि यंत्रों की व्यवस्था की जाती है | इसके लिए १०-१२ नवयुवकजनों का प्रबन्ध किया जाता है जो अपने

कन्धों पर लाउड स्पीकर और मशीन लेकर चलते हैं, इन यंत्रों में ऐसी व्यवस्था होती है कि यात्रा के आगे जो संगीतमय संकीर्तन होता है, उसकी ध्वनि बिना तार के ही २-३ किलोमीटर दूर तक प्रसारित होती रहती है और उसके माध्यम से दूर तक फैले हुए १५-२० हजार यात्री रसमय संकीर्तन का श्रवण करते हुए आनन्द से झूमते हुए चलते हैं, उन्हें किसी प्रकार की थकावट अथवा नीरसता का अनुभव नहीं होता है | मार्ग में जो भी लीला-स्थलियाँ पड़ती हैं, यात्रा के व्यवस्थापक संतजन यात्रियों को उनका दर्शन कराते एवं उनकी महिमा का वर्णन करते हैं | 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' से ब्रजवासियों को अगाध स्नेह है, परिक्रमा के दौरान जो भी गाँव पड़ते हैं, वहाँ के ब्रजवासी अत्यंत प्रेम और उत्साह के साथ यात्रियों का स्वागत करते हैं, यात्रियों पर पुष्प-वर्षा करते हैं और उन्हें अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ बनाकर खिलाते हैं | प्रत्येक गाँव के ब्रजवासी प्रतिवर्ष अत्यधिक उत्सुकता के साथ 'राधारानी ब्रजयात्रा' की प्रतीक्षा करते हैं | यात्रा जब अपने पड़ाव-स्थल पर पहुँचती है तो वहाँ पहले से ही यात्रियों के निवास हेतु दूर-दूर तक फैले विशाल तम्बू-तनातों की व्यवस्था की जाती है | कई टैंकरों के द्वारा यात्रियों के लिए जल और स्नान-सुविधा का प्रबंध रहता है | जेनरेटर के द्वारा विद्युत-व्यवस्था का भी प्रबन्ध रहता है | यात्रा के पड़ाव-स्थल पर भी अनवरत रसमय संकीर्तन और नृत्य की अनुपम छटा बिखरी रहती है | जिन लीलास्थलियों से यात्री गुजर कर आते हैं और जहाँ पर उनका पड़ाव-स्थल होता है, सांयकालीन सत्संग में श्रीबाबामहाराज शास्त्रीय प्रमाण के द्वारा विस्तार से वहाँ की कथा सुनाते हैं | राधारानी ब्रजयात्रा का उद्देश्य केवल ब्रज की परिक्रमा और ब्रज-दर्शन ही नहीं है अपितु इसका मूल उद्देश्य तो ब्रजभूमि में भगवन्नाम-संकीर्तन का प्रचार करना, ब्रज के नष्ट हो रहे तीर्थ-स्थलों का जीर्णोद्धार, उनका पुनः प्राकट्य तथा इनके माध्यम से ब्रज की लुप्त हो रही संस्कृति का संरक्षण करना है | इस ब्रजयात्रा के माध्यम से ब्रज के वास्तविक स्वरूप को लाने के उद्देश्य की पूर्ति में बहुत अधिक सफलता मिली है | यात्रा के प्रभाव से ब्रज में अनेकों कुंडों का जीर्णोद्धार किया गया, लुप्त हुई लीला-स्थलियों की खोज हुई, वनों का संरक्षण किया गया तथा ब्रज के दिव्य पर्वतों को खनन-माफियाओं के चंगुल से मुक्त कराकर उनकी सुरक्षा की गई | यही वह यात्रा है जिसने जाने कितनों को राधा-माधव का अनन्य उपासक बनाकर सांसारिक मोह-माया से सदा-सर्वदा के लिए मुक्त कर दिया, कई भक्तों को तो इस यात्रा के माध्यम से ही अखंड ब्रजवास की प्राप्ति हुई |

ब्रज के वनों का संरक्षण:-

कृष्णलीलाकाल में वन, उपवन, प्रतिवन तथा अधिवनों से आवृत यह ब्रजभूमि अत्यन्त रमणीय थी | श्रीराधामाधव ने ब्रज में अपनी लीलाएँ कृत्रिम भवनों में नहीं कीं अपितु ब्रज के दिव्य वन ही उनकी लीलाओं के केन्द्र थे | काल के कुचक्र से धीरे-धीरे सारे वन नष्ट हो गये, मात्र कुछ ही वन बचे थे, उन पर भी भू- माफियाओं की कुदृष्टि लगी हुई थी | ऐसे वनों में वृषभानुनन्दिनी श्रीराधारानी के निज करकमलों से निर्मित, उनकी नित्य विहार स्थली श्रीगह्वरवन भी समाप्ति के कगार पर था परन्तु श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान के ब्रजरक्षक संत श्रीबाबामहाराज ने ४६ वर्षों के कठिन संघर्ष के बाद इसे बचा ही लिया |

गौ-सेवकों की जिज्ञासा

श्री माताजी गौशाला का बैंक खाता दिया जा रहा है :-

SHREE MATAJI GAUSHALA

915010000494364

UTI B. 0001058 , AXIS BANK KOSI KALAN

मानमन्दिर के ब्रज-सेवा हेतु समर्पित कर्मठ ब्रजवासियों के सहयोग से गह्वरवन को आरक्षित कराया गया और आज यह वन सरकारी विभाग (वन विभाग) के आधिपत्य में होने पर भी श्रीमानमन्दिर द्वारा पोषित है और यहाँ श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से अनेकों वृक्ष लगाये गये हैं | गह्वरवन का संरक्षण कोई सहज में ही नहीं हो गया, ४६ वर्षों तक श्रीबाबामहाराज तथा उनके सहयोगी ब्रजवासियों को लोगों का विरोध सहना पड़ा और अन्त में श्रीजी की कृपा से ही यह दिव्य वन सुरक्षित हुआ | इसी प्रकार मानमन्दिर सेवा संस्थान द्वारा ब्रज में अन्य भी कई वन रक्षित हुए, जैसे - पांडव गंगा (बठैन), नौबारी-चौबारी (डभारा), दर्शन वन, कलावटा (काम्यवन) आदि अनेक ब्रज के स्थलों में श्रीमानमन्दिर द्वारा सघन वृक्षारोपण किया गया | श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान द्वारा ही रासवन (रासौली) की रक्षा हुई; गौड़ेश्वर सम्प्रदाय के प्रसिद्ध आचार्य श्रीजीवगोस्वामीजी का मानना है कि रास का प्रारम्भ इसी स्थल से वेणुनाद के द्वारा हुआ था | रासलीला का उद्गमस्थल यह प्राचीन वन भी ब्रजनाशियों की चपेट में जा रहा था किन्तु श्रीराधामानबिहारीलाल की कृपा से यह सुरक्षित हो गया|

श्रीयमुनाजी की संरक्षा का संप्रयत्न

ब्रज की पहचान हैं – **श्रीयमुनाजी | यमुनाजी नहीं तो ब्रज नहीं** | गर्गसंहिता के अनुसार गोलोक धाम में श्रीकृष्ण द्वारा गोलोकेश्वरी श्रीराधारानी से धराधाम पर अवतरित होने की प्रार्थना करने पर यमुनाजी के बिना उन्होंने पृथ्वी पर आने से इन्कार कर दिया; ऐसी राधामाधव की प्रेम स्वरूपा, उनकी नित्यसहचरी, उनकी लीला की नित्य संगिनी श्रीयमुनामहारानी आज ब्रज में हैं ही नहीं, इस बात का भी ब्रज और ब्रजबाह्य यमुनाप्रेमी भक्तों को पता नहीं था | इस विषय पर जब श्रीमानमन्दिर द्वारा गहन शोध कार्य किया गया, तब जाकर कृष्ण भक्तों को यह विदित हुआ कि यमुनोत्री से ब्रज की ओर कल-कल प्रवाहित होने वाली यमुना जी की निर्मल और स्वच्छ धारा को बीच में ही हरियाणा प्रान्त में यमुना नगर के निकट हथनी कुण्ड बैराज का निर्माण कर रोक लिया गया है | हथनीकुण्ड से दिल्ली की दूरी लगभग १४० कि.मी. है | इस बीच में यमुना जल बिल्कुल नहीं है, सूखी पड़ी हैं | परन्तु दिल्ली से एक दूसरी यमुनाजी शुरू हो जाती हैं, कैसे ? दिल्लीवासी करोड़ों लोगों का मलमूत्र और वहाँ की फैक्ट्रियों का दूषित रासायनिक जल ही यमुनाजी के रूप में प्रवाहित होता हुआ ब्रज में आता है | करोड़ों लोग आस्था से उसी को यमुनाजी समझ कर आचमन लेते हैं एवं अपने घर-मन्दिरों में श्रीठाकुरजी (श्रीभगवान्) को स्नान कराते हैं | यह बड़े दुर्भाग्य की बात है | ऐसी दर्दनाक स्थिति को देखकर श्रीमानमन्दिर द्वारा यमुनाजी की धारा को ब्रज में लाने के लिए यमुना आन्दोलन के माध्यम से बहुत बड़ा प्रयत्न किया गया | **(यमुना मुक्तिकरण एवं शुद्धिकरण** हेतु 'मानमंदिर सेवा संस्थान के संरक्षण' में मार्च २०११ में इलाहाबाद से दिल्ली तक पैदल यात्रा चली, जिसमें हजारों भक्त शामिल थे | पुन: मार्च २०१३ में आन्दोलन हुआ | वृन्दावन से दिल्ली तक लाखों लोग सम्मिलित हुए, सरकार ने शीघ्र कार्यवाही करने का लिखित आश्वासन दिया परन्तु कुछ नहीं किया,जिसका परिणाम यह हुआ कि सरकार ही चली गयी | मार्च २०१५ में पुनः आन्दोलन हुआ, जिसमें लाखों लोग सम्मिलित हुए थे | दिल्ली में जन्तर-मन्तर पर माननीय मंत्री श्रीरविशंकरजी ने भाषण दिया था कि मैं आपको आश्वासन देने नहीं बल्कि यह बताने आया हूँ कि माननीय प्रधानमन्त्री मोदीजी व राजनाथसिंहजी ने आपकी माँगें मान ली हैं और शीघ्र ही

कार्य शुरू होगा, उनके इस वक्तव्य से आन्दोलन स्थगित कराया गया लेकिन भारत सरकार द्वारा यमुना-भक्तों को पूर्णतः आश्वासन दिए जाने पर भी अब तक कोई संतोषजनक कार्यवाही नहीं हुई है | हम भारतवासियों की यमुना-मुक्तिकरण की माँग भारत सरकार स्वीकार कर संतोषजनक कार्यवाही करती है तो यह सच्चे रूप में **ब्रज की सेवा** होगी,जिससे ब्रजराज श्रीकृष्ण अत्यन्त प्रसन्न होंगे | उनकी प्रसन्नता से ही ब्रज का सर्वांगीण विकास सम्भव होगा | पूज्य श्रीबाबामहाराज का कहना है कि यमुना जी किसी सरकारी प्रयत्न से, धनबल, जनबल अथवा किसी व्यक्ति विशेष के प्रयास से ब्रज में नहीं आयेंगीं, वह तो केवल श्रीराधारानी की कृपाशक्ति से ही ब्रज में आ सकती हैं, इसलिए हमें निराश नहीं होना चाहिए और उनके चरणोंका आश्रय लेकर, संकीर्तनमयी आराधना के माध्यम से बारम्बार पूर्ण धैर्य और विश्वास के साथ यमुना आन्दोलन को जारी रखना है, जब तक श्रीयमुना महारानी ब्रज की पावन धरा का स्पर्श नहीं कर लेतीं तब तक बारम्बार श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान यमुना जी को ब्रज में लाने का प्रयास करता रहेगा और श्रीजी की कृपा से एक दिन यमुना जी ब्रज में अवश्य पधारेंगी | पूज्य बाबा का संकल्प भविष्य में अवश्य पूर्ण हो जायेगा क्योंकि आज तक ब्रज की सेवा के सम्बन्ध में उनका कोई भी संकल्प अधूरा नहीं रहा |

(दीदीजी गुरुकुल, मान मंदिर)
परम पूज्या दीदी जी का संक्षिप्त परिचय

पूज्य श्री बाबा महाराज की बड़ी बहन श्रीमती तारकेश्वरी देवी जिन्हें सभी दीदी जी के रूप में जानते हैं, वह कानपुर में डिग्री कॉलेज की प्रोफ़ेसर थीं | श्री बाबा महाराज के प्रति अत्यधिक स्नेह होने के कारण अध्यापन कार्य एवं गृहस्थ जीवन से पूर्णतया विरक्त होकर उन्होंने भी बरसाना के गह्वरवन में स्थाई ब्रजवास किया | वह स्वयं भी मानमंदिर में आध्यात्मिक शिक्षा से ओतप्रोत एक दिव्य गुरुकुल के पक्ष में थीं क्योंकि उन्होंने आधुनिक भौतिक शिक्षा के दूषण को अत्यन्त निकट से देखा था इसीलिए सर्वत्याग के सिद्धांत पर जीवनयापन करते हुए वह अपनी पेंशन की समस्त धनराशि मानमंदिर गुरुकुल में अध्ययनरत् बालक-बालिकाओं के प्रति प्रदान करती रहीं, उससे प्रारम्भिक अवस्था में बच्चों को बहुत सहायता मिली | इसीलिए मानमन्दिर गुरुकुल उन्हीं के नाम पर स्थापित किया गया है | उन्होंने श्रीबाबामहाराज की आदर्श भगिनी का पूर्ण दायित्व निभाया | अत्यंत वृद्धावस्था में भी पूज्य बाबा महाराज को अपने हाथों से भोजन बनाकर पवाती थीं | श्रीबाबा महाराज के स्वास्थ्य के प्रति अत्यधिक चिन्तित रहने के कारण वह सदा-सर्वदा अपने इष्ट महादेवजी की आराधना में सतत् संलग्न रहा करती थीं | वास्तव में वर्तमान समय में ऐसी बहन होना अत्यन्त कठिन है, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण परिवार की आसक्ति का त्यागकर मानमंदिर गुरुकुल में यथाशक्ति सहयोग दिया | मानमन्दिर के गुरुकुल का नाम "दीदीजी गुरुकुल" होने का मूल कारण यही है |

पाश्चात्य विद्वान् हर्बर्ट स्पेन्सर ने कहा है-

Not education but character is man's greatest need and greatest safeguard.

न कि शिक्षा वरन् चरित्र मानव की सबसे बड़ी आवश्यकता है और उसका सबसे बड़ा रक्षक है |

भारत के महापुरुषों ने भौतिक शिक्षा नहीं अपितु **'आध्यात्मिक शिक्षा'** को चरित्र निर्माण का सबसे प्रभावशाली व महत्वपूर्ण माध्यम माना है | आधुनिक युग के कलह व सर्वत्र कालुष्य से व्याप्त भौतिकवादी समय में धर्महीनता को ही धर्म निरपेक्षता की संज्ञा देने के प्रयास किये जा रहे हैं, ऐसे नास्तिकता के वातावरण में आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता और भी अधिक बलवती हो जाती है | भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने भी

मानवीय मूल्यों, चरित्र के विकास हेतु आध्यात्मिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया है | अध्यात्म रहित शिक्षा के गिरते हुए स्तर और उसके बढ़ते हुए व्यापारीकरण पर अंकुश लगाने की दृष्टि से श्रीमानमन्दिर में दीदीजी गुरुकुल का उद्भव गह्वरवन बरसाना के अतिनिःस्पृह संत श्रीरमेशबाबा महाराजजी की प्रेरणा से हुआ | बालकों को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक आयामों को समेटे एक भक्तिवर्धक शिक्षा प्राप्त हो, यही इस गुरुकुल का लक्ष्य है | दीदीजी गुरुकुल के दो विभाग हैं - बालकों के आवास और शिक्षा की व्यवस्था मान मन्दिर पर है तथा बालिकाओं की शिक्षा और आवास व्यवस्था श्रीराधारानी के करकमलों से निर्मित गह्वरवन की गोद में बसे 'रसकुंज' में है | दीदीजी गुरुकुल में १०० से अधिक बालक-बालिकायें अध्ययनरत हैं | शिक्षा के अतिरिक्त ये सभी बाल साधक-साधिकाएँ प्रतिदिन पूज्य श्रीबाबामहाराज के प्रातः कालीन सत्संग में सम्मिलित होते हैं तथा आराधनस्थल रसमंडप-भवन में प्रतिदिन सायंकाल 'नृत्य-गान' द्वारा रसोमयी आराधना करते हैं | श्रीप्रह्लादजी महाराज ने कहा है –

कौमार आचरेत्प्राज्ञो धर्मान् भागवतानिह ।
दुर्लभं मानुषं जन्म तदप्यध्रुवमर्थदम् ॥

(श्रीमद्भागवत ७/६/१)

कौमार अवस्था से ही भक्ति करनी चाहिए क्योंकि मनुष्य जीवन अत्यन्त दुर्लभ है | इसलिए बालक-बालिकाओं में भक्तिमय चरित्र का प्रस्फुटन हो, इसी उद्देश्य से दीदीजी गुरुकुल की स्थापना हुई है | दीदीजी गुरुकुल के सभी अध्यापक परम निष्किंचन संत हैं, वे निष्काम भाव से निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते हैं व मधुकरी वृत्ति से भिक्षाटन कर जीवन-निर्वाह करते हैं तथा उनका आचरण विशुद्ध है | यहाँ की यह विशेषता तो अनुभव के द्वारा ही जानी जा सकती है | समाज में प्रत्येक व्यक्ति अपने को निर्लोभी बताता है, किन्तु वर्तमानकाल में शिक्षण संस्थायें उद्योग के रूप में परिवर्तित हो गयी हैं और शिक्षा उद्योग में लाखों रुपयों की घूस का प्रचलन है, ये बात प्रायः सभी जानते हैं | शिक्षण संस्थाओं का अत्यधिक शुल्क होता है तब वहाँ प्रवेश मिलता है, यह आध्यात्मिक-विनाश है, गुरुकुल नहीं है | ६४ वर्ष पूर्व जब पूज्यबाबाश्री ब्रज में आये तो मान मंदिर में उनके पास स्थानीय गाँवों के बालक अध्ययन हेतु आया करते थे | पूज्य श्री ने इन ब्रजवासी बालकों को गीता, भागवत और रामायण तथा अन्य वैदिक ग्रन्थों तथा महापुरुषों के पदों का अध्ययन कराया | इसके अतिरिक्त महाराजश्री ने इन्हें संगीत की भी शिक्षा दी | श्रीबाबामहाराज की संगीत शिक्षा के प्रभाव से बालक गायन, और वादन कला में दक्ष होकर मानगढ़ पर अत्यन्त उत्साह के साथ देर रात तक कीर्तन किया करते थे | ईश्वर-भक्ति के साथ ही बाबाश्री ने इन बालकों को देश भक्ति की भी शिक्षा दी | हर बालक अत्यंत उत्साह से देश भक्ति के गीत गाता था | ये बालक श्री बाबा महाराज के नेतृत्व में मानगढ़ के रासमण्डल पर अत्यंत आवेशयुक्त कीर्तन के साथ देर रात तक नृत्य किया करते थे | श्रीबाबामहाराज के द्वारा मानगढ़ पर संचालित गुरुकुल का यह प्रथम स्वरूप था | महाराजश्री ने इन बालकों और अन्य ब्रजवासियों को धामनिष्ठा की शिक्षा देकर इन्हें धाम-सेवा की ओर भी प्रेरित किया | वर्तमानकाल में मानमंदिर गुरुकुल के आदर्श छात्रों में डॉ. रामजीलाल शर्मा, श्रीराधाकांत शास्त्री (भइयाजी), सुश्री मुरलिका शर्मा और बालसाध्वी श्रीजी हैं | इन्होंने श्रीबाबा महाराज की शिक्षा से अनुप्राणित होकर अपना सम्पूर्ण जीवन ब्रजभूमि की निष्काम सेवा और जनकल्याण के प्रति समर्पित कर दिया है | डॉ. श्री रामजी लाल शर्मा, सुश्री मुरलिका जी और बाल साध्वी श्रीजी देश-विदेश में निष्काम भाव से भारतीय संस्कृति की आत्मा ब्रज संस्कृति का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं | इनके द्वारा ही ब्रज पर्यावरण की सुरक्षा हेतु ठोस प्रयास व मान मंदिर के कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हो रहे हैं | संग्रह-परिग्रह से सर्वथा दूर ये आदर्श ब्रजवासी अपने पास एक पैसा भी नहीं रखते हैं | विदेशों में भी जहाँ–जहाँ ये गये, इन्होंने भारत की गरिमा और सम्मान को बढ़ाया है | प्राचीनकाल में भारत जगद्गुरु क्यों था ? ऐसे आदर्श नागरिकों के कारण ही भारत जगद्गुरु के रूप में विख्यात था | इसी आदर्श को लेकर मानमंदिर में दीदी जी गुरुकुल की स्थापना की गयी है |

* श्रीराधाररसमन्दिर *

श्रीबाबामहाराज के चरणाश्रित व

सर्वात्मसमर्पित परमसंत श्रीरामजीलाल शास्त्री

डॉ.श्रीरामजीलालशर्मा मानमन्दिर सेवा संस्थान के अध्यक्ष तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वान श्रीमद्भागवत व्यास हैं | पूज्य श्रीबाबामहाराज के वह विशेष कृपापात्र हैं | उनके सदन श्रीराधाररसमन्दिर में प्रतिदिन हजारों की संख्या में श्रद्धालुगण भोजन प्रसाद ग्रहण करते हैं | जब श्रीबाबामहाराज प्रयाग से बरसाना आकर मानगढ़ पर निवास करने लगे, उसके कुछ समय पश्चात् ही डॉ.रामजीलालशर्मा अपनी बाल्यावस्था से ही महाराजजी के शरणापन्न हुए | उनकी माताजी भक्तिमती यमुनाजी की श्रीबाबामहाराज के प्रति अगाध निष्ठा होने के कारण उन्होंने बचपन से ही रामजीलाल को श्रीबाबा के प्रति समर्पित कर दिया था | यमुनादेवीजी का अपने इन पुत्र को कड़ा आदेश था कि रात्रि को मानगढ़ पर श्रीबाबामहाराज के पास ही रहो, चाहे घर (रसमंदिर) में कितना भी संकट हो परन्तु रात्रि के समय गुरुदेव के निकट मानगढ़ में ही रहना है | इस आदेश का यह परिणाम था कि रसमंदिर में कई बार चोरों ने सेंध लगायी परन्तु श्रीरामजीलालजी रात्रि को श्रीबाबामहाराज की सेवा में मानगढ़ पर ही रहे, संकट की घड़ी में भी अपने आवास स्थल रसमंदिर में नहीं रुके | डॉ.श्रीरामजीलाल शर्मा को श्रीमद्भागवत प्रवक्ता होने के कारण पण्डितजी के नाम से भी लोग जानते हैं | अपनी परम पूज्यनीया माताजी की तरह उनका भी श्रीबाबामहाराज के प्रति सर्वात्मसमर्पण है | बचपन से ही उनकी पूज्य महाराजश्री के प्रति कितनी प्रगाढ़ निष्ठा थी, इसका अनुमान उनके बाल्यावस्था की एक घटना से लगाया जा सकता है –एकबार बरसाने में किसी सांस्कृतिक पर्व (मेला) के आयोजन में पण्डितजी के माता-पिता ने बच्चों को मेले का आनन्द उठाने के लिए सभी को कुछ पैसे दिए थे | अन्य बच्चों ने तो अपनी रुचि के अनुसार मेले में कुछ वस्तुयें खरीदकर पैसे खर्च कर दिए परन्तु पंडित श्रीरामजीलालजी माता-पिता के दिए हुए उन पैसों को लेकर श्रीबाबामहाराज जी के पास मानगढ़ पर आये और उन्हें वह पैसे भेंट करने लगे | श्रीबाबामहाराज ने उनसे कहा कि तुम्हें पता तो है कि मैं धन के स्पर्श से भी दूर रहता हूँ फिर तुम यह पैसे मुझे देने क्यों लाये? इस प्रकार श्रीबाबामहाराज के द्वारा पैसे लेने से इन्कार करने पर अगले दिन बालक रामजीलाल उन्हीं पैसों से बाजार से कुछ सौंफ और इलायची खरीद लाये और उन्हें एक पुड़िया में बाँधकर श्रीबाबा के तकिये के नीचे रख दिया | जब महाराज जी ने शयन के समय तकिये को उठाया तो उन्हें वह पुड़िया मिली, उसे खोलकर देखा तो सौंफ-इलायची मिली, वह समझ गये कि ऐसा रामजीलाल ने ही किया होगा | उनके आने पर श्रीबाबा ने उनसे पूछा– “तुमने मेरे तकिये के नीचे सौंफ-इलायची क्यों रखी?” बालक रामजीलाल ने उत्तर दिया कि आपने पैसा नहीं स्वीकार किया, इसलिए मैं उस पैसे से आपके लिए सौंफ-इलायची खरीद लाया जिससे कि आप प्रसाद पाने के बाद उसे खा लिया करें, उससे पाचन शक्ति ठीक रहेगी | इसी प्रकार एक अन्य चमत्कारिक घटना भी पंडित जी के जीवन से जुड़ी है जिससे उनको पुनर्जन्म की प्राप्ति हुई | जब पंडितजी वृन्दावन में नगरपालिका इण्टर कालेज में पढ़ते थे तो एकबार वह गंभीर रूप से बीमार हो गए | उस समय वह ‘रंगजी मंदिर’ के पीछे ‘करनानी दाऊजी के मंदिर’ में रहते थे | मंदिर के प्रांगण के पीछे एक हनुमान जी का

मंदिर था | गर्मी के दिन थे, अतः ये वहीं सोते थे | यह घटना सन् १९६५ में गर्मियों की छुट्टी के समय की है | पंडित जी इतने अधिक बीमार हो गए थे कि तख़त से उतार कर इन्हें जमीन पर लिटा दिया गया था | जतीपुरा में इनके कुछ रिश्तेदार रहते थे, उन्हीं के माध्यम से ये वृन्दावन के मंदिर में रहे | विद्यालय वालों ने जतीपुरा फोन कर सूचित किया कि रामजीलाल की मरणासन्न स्थिति है, वहाँ से सूचना इनके घर बरसाना पहुँची | इनकी अस्वस्थता की सूचना पाकर पंडितजी की माताजी श्रीबाबामहाराज के साथ प्रातः वृन्दावन पहुँचीं | उस रात्रि में बड़ा ही विलक्षण चमत्कार हुआ, पंडित जी ने स्वप्न देखा कि यमराज के दूत उन्हें लेने आ गए और बाँधकर ले जाने लगे | पंडित जी ने यमदूतों से कहा– "आप लोग यहाँ हनुमान जी के मंदिर में आये कैसे, जिनके ऊपर महापुरुषों की छाया हो, वहाँ आपलोग नहीं जा सकते हैं |" यमदूतों ने पंडितजी की एक न सुनी और उन्हें यमराज के यहाँ ले गए, वहाँ उन्हें यमराज के दर्शन हुए | वहाँ पर एक बहुत बड़े पुस्तकालय का लम्बा-चौड़ा हॉल था, जिसमें बड़े-बड़े अनेकों रजिस्टर रखे थे; यह सब पंडित जी ने देखा | उन्होंने यमराज से निवेदन करते हुए कहा– "जहाँ हनुमान जी विराजमान हों और संत का आश्रय हो, वहाँ तो यमदूत जाते नहीं हैं, फिर ये लोग मुझे यहाँ कैसे ले आये ?" यमराज ने कहा कि कर्म का फल तो सबको भोगना ही पड़ता है | यह सुनकर पंडित जी ने यमराज से कहा– "आप जो चाहे करें परन्तु पाँच मिनट के लिए मुझे छुट्टी दे दीजिये ताकि मैं वृन्दावन जाकर भोले-भाले संत-महात्माओं से कह आऊँ कि कीर्तन करने व कथा सुनने से कुछ नहीं होता है, कर्मों का फल तो सबको भोगना ही पड़ता है |" इतना सुनते ही मुस्कुराते हुए यमराज ने अपना हाथ नीचे किया और पंडित जी के मृतक शरीर में जान आ गयी | इस घटना को स्वप्न भी नहीं कहा जा सकता | पंडित जी की आँख खुलते ही ऊपर का सारा दृश्य उनकी आँखों के सामने आ गया | पूज्य महाराज जी को जब ये सब बताया गया तो उन्होंने कहा– "प्रभु की कृपा से यह नया जन्म हुआ है |"महापुरुषों का मन में आश्रय हो, उनकी छत्र-छाया रहे तो यमराज भी मनुष्य का कुछ नहीं कर सकते |

पंडित रामजीलालजी की माता जी की घर की आर्थिक दशा अत्यधिक शोचनीय होने के बावजूद भी साधु-संतों और अतिथियों की सेवा में व्यस्त रहती थीं तो पंडित जी भी उनके इस सेवा-कार्य में सहयोग करने के लिए अत्यधिक श्रम करते थे | आगे चलकर श्रीबाबामहाराज ने पंडित जी को संस्कृत का अध्ययन कराया तथा श्रीमद्भागवत की शिक्षा दी | पूज्य महाराजश्री ने भागवत-कथाओं में व्यापारीकरण बढ़ता हुआ देखकर पंडित जी को भागवत-व्यास बनाकर जनकल्याण हेतु श्रीमद्भागवत-कथामृत के प्रचार-प्रसार की आज्ञा दी, उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया कि श्रीमद्भागवत का उद्देश्य अर्थोपार्जन करना नहीं है, निष्काम भाव से भागवत-कथामृत का वितरण करने से वक्ता और श्रोता को भगवान् और भगवत्प्रेम की प्राप्ति होती है | अतः तुम निष्काम भाव से केवल जनकल्याण के उद्देश्य से श्रीमद्भागवत-कथा का प्रचार करो | श्रीगुरुदेव बाबा महाराज की आज्ञा से पंडितजी ने निष्काम भाव से श्रीमद्भागवत-कथा का प्रचार करना आरम्भ कर दिया | पूज्य पंडित श्रीरामजीलालशर्मा अत्यन्त त्यागी और श्रीमद्भागवत तथा संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान हैं | देश-विदेश में वह श्रीबाबामहाराज की आज्ञा से भागवत कथामृत की रसमयी सरिता को प्रवाहित करने में संलग्न हैं | जहाँ भी वह कथा कहते हैं, वहाँ से एक पैसा नहीं लेते, स्वेच्छा से 'श्रद्धालु भक्तजन' **कथा** में जो भी द्रव्य अर्पण करते हैं, उसे वह मानगढ़ पर आकर सर्वप्रथम श्रीबाबामहाराज को अर्पण कर देते हैं | वे भी उस धन को स्वयं ग्रहण न कर 'मान मन्दिर सेवा संस्थान' के विविध जनकल्याणकारी और धाम-सेवा के कार्यों में व्यय करा देते हैं |वह अपनी कथा के माध्यम से प्रभात फेरी (नगर-कीर्तन) का भी प्रचार करते हैं | श्रीमद्भागवत सप्ताह के समापन पर वह श्रोताओं से दक्षिणा देने का अनुरोध करते हैं तो श्रोतागण सोचते हैं

कि व्यासजी धन की दक्षिणा देने का अनुरोध कर रहे हैं परन्तु पंडित जी उनसे कहते हैं कि कथा- श्रवण की वास्तविक दक्षिणा है –**'भगवन्नाम-दान'** इसलिए आप लोग अपने नगर या गाँव में कीर्तन फेरी (प्रभात फेरी) चलाकर भगवन्नाम का दान करें, यही श्रीमद्भागवत कथा की सबसे बड़ी दक्षिणा है | उनकी वाणी का ऐसा प्रभाव पड़ता है कि श्रोतागण सहर्ष ही प्रभात फेरी चलाने के लिए तैयार हो जाते हैं और अगले दिन से ही संकीर्तन-फेरी का शुभारम्भ कर देते हैं | कई बार तो कथा में श्रद्धालु भक्तों ने स्वेछा से जो धन समर्पित किया होता है, उसे भी पंडितजी उन्हीं भक्तों को वापिस कर देते हैं यह कहकर कि इस धन से आप प्रभात फेरी के लिए मेगाफोन (माइक) व ढोलक आदि खरीद लें तथा कभी-कभी कहीं किसी गौशाला का निर्माण होना होता है या जहाँ मन्दिर नहीं होते तो वह अपनी कथा में समर्पित धन को कथा के आयोजकों को गौशाला व मन्दिर निर्माण हेतु वापस कर देते हैं | पंडित श्रीरामजीलाल जी इतने बड़े त्यागी हैं कि उन्होंने अपने निवास के लिए अपने सदन रसमंदिर या मानगढ़ में किसी कमरे तक का निर्माण नहीं करवाया, आज भी वह मानगढ़ में श्रीबाबामहाराज द्वारा प्रयुक्त कमरे में ही रहते हैं, प्रतिवर्ष वह अमेरिका भी भागवत-कथा के प्रचार हेतु जाते हैं, उनके साथ उनकी भतीजी साध्वी मुरलिकाजी और भतीजे श्रीराधिकेशजी भी जाते हैं | वहाँ भी वे निष्काम भाव से कथावाचन करते हैं, कहीं किसी से मानमन्दिर सेवासंस्थान के विविध क्रियाकलापों हेतु दान की याचना नहीं करते हैं | साध्वी मुरलिका जी, साध्वी श्रीजी और श्रीराधिकेश जी को भागवत-व्यास बनाने का पूर्णश्रेय पंडित श्रीरामजीलाल को ही है, उन्होंने ही इन बच्चों को स्कूली भौतिक शिक्षा से पृथककर आध्यात्मिक भक्तिमय शिक्षा हेतु श्रीबाबामहाराज को समर्पित कर दिया, ये तीनों कथा-व्यास अपने ताऊजी के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए सर्वत्यागमय जीवन व्यतीत करते हैं और निष्काम भाव से श्रीमद्भागवत कथा कहते हैं | पंडित श्रीरामजीलाल शर्मा जी के आवास-स्थल श्रीराधारसमंदिर से उनकी पूज्य माता श्रीमती यमुना जी के परमोत्कृष्ट सेवा-भाव के कारण आज भी हजारों श्रद्धालुओं की भोजन-प्रसाद सेवा हो रही है | प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में अतिथि भक्तगण व साधु-संत रसमंदिर में प्रसाद पाते हैं | पंडित जी अत्यन्त उदार व्यक्तित्व के स्वामी हैं, उनकी उदारता के कारण कई अन्य भक्त भी भागवत-व्यास बन चुके हैं | उनकी उदारता के कारण ही उनके गृह रसमंदिर में प्रतिदिन किसी भी समय कोई भोजन करने पहुँच जाये तो कभी कोई वहाँ से भूखा नहीं लौटता | पंडित जी को यह उदारता और सेवा-भाव विरासत में अपनी माता परमभक्तिमयी श्रीमती यमुनादेवी से मिली है | माताजी ने रसमंदिर में अत्यन्त निर्धनता की स्थिति में भी साधु-संतों और अतिथियों की सेवा के व्रत को सर्वात्मभाव से निभाया और वह श्रीबाबामहाराज के प्रति भी पूर्ण समर्पित थीं | उनके यही दिव्य गुण श्रीपंडितजी में भी समाहित हैं | आधुनिक युग के भौतिकतावादी परिवेश में जहाँ आध्यात्मिकता के चोंगे में लोग वित्तैषणा और लोकैषेणा का परिपोषण करने में लगे हैं, पंडितजी के पावन सदन श्रीराधारसमन्दिर जैसा त्यागमय परिवार, ऐसा त्यागमय घर दुनिया में अन्यत्र दुर्लभ ही है |

आप साधना चैनल पर प्रात: ०६:४० से पूज्य श्री रमेश बाबा महाराजजी एवं प्रात: ०७:०० बजे से ब्रजबालिका साध्वी मुरलिकाजी का नित्य सतसंग देख सकते हैं

अलौकिक प्रतिभा की धनी हैं बालसाध्वी मुरलिकाजी

ब्रजभूमि भगवान् राधामाधव की जन्मस्थली है जिसकी अलौकिकता का अनुभव बड़े-बड़े संतों-विद्वज्जनों ने किया है | इसमें मूर्धन्य महापुरुषों के अवतरित होने का भी हमारा इतिहास साक्षी है | जैसे - सूर, तुलसी, मीरा यहाँ तक कि स्वयं चैतन्य महाप्रभु, वल्लभाचार्य, स्वामी श्री हरिदास जी आदि ने अध्यात्म जगत में क्रान्ति ला दिया था | जिस समय सारा राष्ट्र विदेशी आक्रान्ताओं के उत्पीड़न से त्रस्त था, उस समय ऐसे महापुरुषों ने अपनी आभा-प्रतिभा से जगत को आलोकित कर परम कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया था |ऐसे ही वर्तमान काल में दिव्य संस्कारों को लेकर ब्रज के गहवरवन, बरसाना में जन्मी बालिका मुरलिका ने भी जन्म से ही आभास करा दिया कि यह कोई साधारण बालिका नहीं अपितु अवतरित दिव्यलोक की कोई दिव्यात्मा संसार को कुछ देने आई है | जिस समय भौतिक जगत अन्याय, अनाचार में और अंधत्व को प्राप्त कर स्वविनाश की भूमिका गढ़ता है उस समय भगवान् ही अपनी कृपा से अपने ही अंशभूत किसी दिव्यजीव को जगत कल्याणार्थ भूतल पर भेजा करते हैं | साधारण से घर में जन्मी परन्तु जन्म के बाद से ही साधारण घर, घर नहीं अपितु जनकल्याण का केन्द्र बन गया | श्री राधारसमंदिर गहवरवन, बरसाना (मथुरा) आज एक ऐसा तपोमय स्थल है जहाँ हजारों भक्त नित्य निःशुल्क प्रसाद पाते हैं और निःशुल्क आवास कर यहाँ धामावास करते हैं | बचपन से ही ब्रजबाला मुरलिका को न खिलौनों का मोह था और न किसी खाने-पीने, पहनने के साधनों की जिज्ञासा थी | अनासक्ति इतनी कि न माता-पिता के प्रति आकर्षण और न अन्य किसी संगी साथी का संग | अकेले कहीं एकान्तिक चिन्तन में देखकर परिवारी जन तक आश्चर्यचकित होते कि इतनी छोटी और अबोध बालिका क्या चिन्तन करती है ? बस अपने श्रद्धेय गुरुदेव पूज्यपाद श्री रमेश बाबा जी के पास बैठना सदा उनको अच्छा लगता | महापुरुषों की निकटता और पूर्वजन्मों के दिव्य संस्कारों ने समस्त मायामोह से इस बालिका को सदा दूर रखा | प्रारंभिक शिक्षा अपने घर में संचालित विद्यालय 'रासेश्वरी विद्यामंदिर'में से बलात् अवश्य पूरा किया परन्तु जो जन्म पूर्व से ही निष्णात थी, उसे क्या आवश्यकता थी इन लौकिक विद्याओं की ? त्याग, वैराग्य इतना कि आज तक कभी द्रव्य का स्पर्श तक नहीं किया | इन्द्रियजित इस देवी ने मात्र दस वर्ष की आयु में श्रीमद्भागवत कथा कहना प्रारम्भ किया तो सबको आश्चर्य में डाल दिया | आज भारतवर्ष के प्रत्येक क्षेत्र में लोककल्याण का वास्तविक मार्ग दिखाती हुयी सबको धन्य कर रही हैं | निःस्पृहता का संदेश सारे संसार को देती हैं | कहती हैं कि धर्म के लिए भी धन का संग्रह नहीं करना चाहिए | ऐसा वे करके दिखाती हैं | कथा करती हैं परन्तु धनेच्छा से नहीं | कभी कहीं माँगती नहीं हैं | मांगती क्या वे तो स्पर्श तक नहीं करती |अल्पायु में समस्त ब्रजभूमि का अनुसंधानात्मक अध्ययन कर ब्रज के दिव्य स्थलों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन ब्रजसाध्वी मुरलिका ने स्वरचित ८१८पृष्ठ के वृहद्ग्रन्थ "रसीली ब्रजयात्रा" में किया है जो किसी सामान्य जनमानस के सामर्थ्य की बात नहीं थी | लीलास्थलों की गूढ़ कथाओं को उन्होंने प्रकाशित कर ब्रजवासियों का बड़ा ही हित किया है | इसके अतिरिक्त इतना ही बड़ा उसका दूसरा भाग भी उन्होंने लिखा है | जिसमें ब्रज की वाह्य सीमा का चित्रण किया गया है | साथ ही जो आज संकीर्ण लोगों ने ब्रज को सीमित कर उसका अंग-भंग सा कर दिया है उसके वास्तविक स्वरुप को पुनः स्थापित करने का उनका प्रयास है | ब्रज पूर्व में अलीगढ़, पश्चिम में पहाड़ी झिरका फिरोजपुर, उत्तर में गुडगाँव और दक्षिण में वटेश्वर व ग्वालियर की सीमाओं को समेटे हुए है | सप्रमाण यह सब विषय द्वितीय भाग का अंश है | अपनी मधुरतम वाणी से मुरलिका के आकर्षणवत् समस्त जगत को प्रकाशितकरने की क्षमता वाली साध्वी मुरलिका ने चाहे संगीत का क्षेत्र हो अथवा विद्वता का या वाणी का गाम्भीर्य, अपनी प्रतिभा से सिद्ध कर दिया है कि वे कोई सामान्य बालिका नहीं अपितु अलौकिक बालिका हैं |